Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सव्वे अकंतदुक्खा य,
अओ सव्वे अहिंसगा।

कोई भी जीव दुःख नहीं चाहता, इसलिए सभी जीव अहिंस्य हैं।

❀ ❀ ❀

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 31 • 9 - 15 मई, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 07-05-2022 • पेज : 20 • ₹ 10

आचार्यश्री महाश्रमण षष्टिपूर्ति महोत्सव एवं युगप्रधान पदाभिषेक पर्व श्रद्धासिक्त वंदन-अभिनंदन

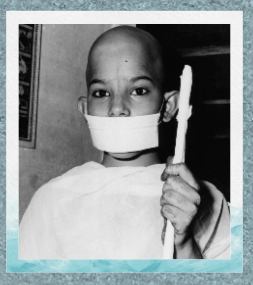

नेमा माँ के राज दुलारे, है मोहनगारी छवि तुम्हारी।
हृदय देवते मन मंदिर में, बसी हुई है सुरत प्यारी।।

गुरुवर तेरे अवदानों का, विश्व समूचा है आभारी।
विनय, समर्पण की मूरत तुम, तुलसी महाप्रज्ञ पटधारी।।

जयकारा मिलते ही गुरुवर का, चिंता मिट जाती सारी।
महाश्रमण चरणों में आकर, खिलती मन की क्यारी-क्यारी।।

षष्टिपूर्ति के अवसर पर, हर्षित है गण बगियाँ सारी।
रहो निरामय आप हमेशा, राज करो वर्ष हजारी।।

भावों का थाल सजाकर, आरती उतारें आज तुम्हारी।
युगप्रधान अलंकरण बेला पर, चतुर्विध धर्मसंघ है बलिहारी।।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण

श्रद्धाप्रणत तेरापंथ टाइम्स परिवार

10 मई 2022, सरदारशहर

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 मई, 2022

✦ *देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

ऐतिहासिक घंटाघर बना अद्वितीय नागरिक अभिनंदन समारोह का गवाह

सरदारशहर में धार्मिकता एवं निवासियों में चित्त समाधि रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, १ मई, २०२२

सरदारशहर के लाडले सरताज का सरदारशहर के नगरवासियों द्वारा मुख्य बाजार में नागरिक अभिनंदन किया गया। सभी समाज-वर्ग के लोग इस नागरिक अभिनंदन में हजारों की संख्या में शामिल हुए। घंटाघर से गढ़ तक उपस्थित जनमेदिनी का नजारा अद्भुत था। आज का नागरिक अभिनंदन एक ऐतिहासिक अभिनंदन था।

समुपस्थित नगरवासियों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि धर्मशास्त्र का मंतव्य है कि मनुष्य जन्म का मिलना दुर्लभ होता है। ८४ लाख जीव योनियाँ धर्म साहित्य में बताई गई हैं। उनमें यह मनुष्य जीवन दुर्लभ भी है, और महत्त्वपूर्ण भी है।

हमारे भारत में साधु बनना तो बहुत ऊँची बात है। भारत का यह भाग्य है कि यहाँ संत परंपरा चलती आ रही है। अतीत में भी कितने महर्षि पुरुष हुए हैं। संत संपत्ति भारत के पास है। इसके साथ-साथ भारत के पास ग्रंथ संपत्ति भी है। भारत में धार्मिक पंथ भी अनेक हैं। इनका अच्छा उपयोग हो। संत लोग अपनी साधना भी करे और संतों से जनता को सन्मति प्राप्त होती रहे।

पंथ संपदा को बताते हुए पूज्यप्रवर ने आगे फरमाया कि मुझे भी भारत की इस संत परंपरा से मिलने का मौका मिला। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी जैसे धर्मगुरु का मुझे सान्निध्य

मिला। मुनि सुमेरमल जी 'लाडनूं' ने मुझे बाल्यावस्था में संन्यास-मुनित्व की दीक्षा प्रदान की।

तीन लोक का मालिक, अकिंचन साधु होता है। जिसने परिग्रह का त्याग कर दिया। सब प्राणियों को अपने समान मान लिया, वो तीन लोक का मालिक हो सकता है। त्याग की महिमा है। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि साधु परम पद को पाने के लिए सब कुछ त्याग देता है। त्यागी बनना बड़ी बात है।

मैं सरदारशहर से संसारपक्षीय से जुड़ा हुआ हूँ। यहाँ लंबे अर्से के बाद आना हुआ है। आज सरदारशहर की जनता ने, आप लोगों ने मेरा स्वागत-अभिनंदन किया है, यह आपका मेरे प्रति एक प्रेम-स्नेह है। नगर की चाबी देना बहुत बड़ा सम्मान होता है।

सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति का संकल्प कराते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि ये तीन संकल्प सरदारशहरवासियों में व्यापक रूप से रहें। सरदारशहर में धार्मिकता, शांति रह सके, चित्त समाधि रह सके। मैं आपके प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करता हूँ। आपके जीवन में शांति-धार्मिक चेतना व चित्त समाधि रहे।

पूज्यप्रवर के नागरिक अभिनंदन में व्यवस्था समिति की ओर से बाबूलाल बोथरा, विकास मालू, नगरपालिका अध्यक्ष राजकुमार चौधरी, उपाध्यक्ष अब्दुल रसीद, पूर्व विधायक अशोक पींचा, राज्यमंत्री अनिल शर्मा, आरएसएस से रमेशचंद्र अग्रवाल आदि ने अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। नगरजनों द्वारा समुह गीत का संगान किया गया। नगर द्वारा अभिनंदन पत्र का वाचन संपत जांगिड़ ने किया।

सरदारशहर नगर की चाबी तथा अभिनंदन पत्र नगरपालिका अध्यक्ष व अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा पूज्यप्रवर को भेंट किया गया। तेरापंथी सभाध्यक्ष सिद्धार्थ चिंडालिया ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अशोक भोजक ने किया।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सक्षमता में शांति रखना बड़ी बात होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, २ मई, २०२२

मायड़ भूमि में साधना के श्लाकापुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि दस धर्मों में एक धर्म है—क्षमा। शांति होने पर भी शांति रखना। ईंट का जवाब पत्थर से नहीं, नरमाई से दें। शत्रु के साथ भी मित्रतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। विरोधी के प्रति भी मंगलभावना रखना। विरोध को विनोद समझकर शांति रखना।

मजबूरी में प्रतिशोध लेना बड़ी बात नहीं। चंडकौशिक सर्प को भगवान महावीर का सान्निध्य मिला। वो तेज, सक्षम सर्प उसने क्षमा धारण कर ली। सक्षमता में शांति रखना बड़ी बात होती है।

हम लोग सामुहिक जीवन जीते हैं, कोई कठोर व्यवहार कर लें, वहाँ समता-शांति रखें। संत वह होता है, जो शांत होता है। यह एक प्रसंग से समझाया। नवनीत और संत के हृदय में अंतर है। नवनीत खुद तपता है, तो पिघल जाता है। संत का हृदय दूसरों के ताप को देखकर पिघल जाता है। गृहस्थ भी इस माने संत बन सकते हैं। जीवन में सादगी हो, विचार उच्च हों। गृहस्थ भी महानता, उदारता रखे।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

मायड़-भूमि के तेरापंथ भवन में पूज्यप्रवर का पदार्पण

जीवन के हर व्यवहार में धर्म की साधना हो : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, २७ अप्रैल, २०२२

सरदारशहर गौरव, सरदारशहर के लाल, तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी मायड़ भूमि सरदारशहर के तेरापंथ भवन में पधारे। समाधि स्थल से लगभग प्रातः ६:५० पर विहार करते हुए पूज्यप्रवर महाश्रमण द्वार के पास पधारे। वहाँ से विशाल जनमेदिनी के साथ पूज्यप्रवर ने सरदारशहर में प्रवेश किया।

सरदारशहर में जन्में, सरदारशहर में बचपन बीता, सरदारशहर में ही दीक्षित हुए और सरदारशहर में ही तेरापंथ के सरताज बने। आपश्री के संसारपक्षीय पिता स्व० श्री झुमरमल जी दुगड़ व माता सुश्राविका नेमाजी थे। आपश्री ने यहाँ के राजेंद्र विद्यालय में ही प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की थी। सरदारशहर का लगभग २२ दिवसीय प्रवास और सात मुख्य कार्यक्रम यहाँ आयोजित होने वाले हैं।

महामनीषी ने विहार के अंतर्गत मार्ग में जगह-जगह अपने चिर-परिचित श्रावक-श्राविकाओं को व अन्य लोगों को मंगल आशीर्वाद प्रदान करवाया। मार्ग में अपने संसारपक्षीय पैतृक घर भी पधारे। पारिवारिकजनों ने कांस्य की थालियाँ बजाकर मंगल अभिवादन किया।

युगप्रधान समवसरण में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी जब मंचासीन हुए तब ऐसा लग रहा था कि मानो अयोध्या में श्रीराम पधार गए हैं। पूरा शहर राममय-अयोध्यामय बन गया था। जन-जन की जबान पर एक ही नारा था—जय-जय

ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण।

जन-जन के राम ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अर्हत् वाङ्मय में कहा गया है कि हमारी दुनिया में मंगल की कामना की जाती है। आदमी दूसरों के लिए भी मंगलकामना करता है व स्वयं का भी मंगल चाहता है। कुछ प्रयास-उपाय भी किया-लिया जाता है।

शास्त्रकार ने कहा कि सबसे उत्कृष्ट मंगल धर्म होता है। पदार्थों को भी मंगल के रूप में व्यवहृत किया जाता है। पदार्थों से बहुत ऊँचा मंगल धर्म होता है। धर्म कौन से हैं, इस संबंध में शास्त्र में तीन शब्दकाम में लिए गए हैं—अहिंसा, संयम और तप धर्म है। जिस आदमी के जीवन में अहिंसा है, संयम की साधना है और तपस्या है, तो जीवन में मंगल है।

साधु के जीवन में तो पहला महाव्रत सर्व प्राणातिपात विरमण का होता है। साधु तो अहिंसा की साधना बड़ी सूक्ष्मता से पालन करते हैं। साधु न रात्रि भोजन करता है, यह भी अहिंसा और संयम की साधना है। साथ में तपस्या भी हो सकती है। साधु को न भोजन बनाना, न अपने लिए बनवाना। साधु भिक्षाचारी करे।

गृहस्थों में अहिंसा की साधना करने का प्रयास हो। निरामिष व अनंत काय के उपयोग से बचें। रात्रि भोजन का परिहार करने का प्रयास करें। वाणी में भी अहिंसा झलके। मन में भी हिंसा का भाव न आए।

संयम है, वह भी धर्म है। अणुव्रत में भी संयम की बात है। संयम आधार-प्राणतत्त्व है, अणुव्रत का। छोटे-छोटे नियमों से संयम की साधना हो सकती है।, जैन धर्म में तपस्या का भी महत्त्व है। अक्षय तृतीया का प्रसंग सामने है। वर्षीतप भी एक अच्छी तपस्या है। ऊनोदरी करना भी तप है। तपस्या भी धर्म है, मंगल है।

शास्त्रकार ने कहा है कि जिसका धर्म में मन लगा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। आदमी के जीवन में धर्म रहे। धर्म स्थान या कर्म स्थान हर जगह धर्म की साधना की जा सकती है। जीवन के व्यवहार में भी धर्म हो।

लगभग २६२ वर्ष पहले आचार्य भिक्षु हमारे धर्मसंघ के प्रथम आचार्य हुए। उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा चली। नौवें आचार्य गुरुदेव तुलसी को हमने देखा है। उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी हुए हैं। जिनका महाप्रयाण सरदारशहर में ही हुआ था।

आज हमारा सरदारशहर आना हुआ है। सरदारशहर मघवागणी की महाप्रयाण भूमि, माणकगणी की आचार्य पदारोहण भूमि एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की दीक्षा भूमि एवं महाप्रयाण भूमि है और भी अनेक प्रसंगों से जुड़ा हुआ क्षेत्र है। आज एक लंबे अर्से के बाद लगभग साढ़े आठ वर्षों बाद आना हुआ है। कुछ अनेक कार्यक्रम यहाँ के लिए निर्धारित हैं। सरदारशहर के जैन-अजैन सभी में धर्म और अध्यात्म की चेतना पुष्ट हो।

सरदारशहर में साधु-साध्वियों एवं समणियों का भी अच्छी संख्या में आगमन हुआ है।

पूज्यप्रवर के सरदारशहर में पधारने पर उनकी अभिवंदना एवं स्वागत में व्यवस्था समिति स्वागताध्यक्ष महेंद्र नाहटा, तेरापंथ महिला मंडल एवं अध्यक्षा सुषमा पींचा, अणुव्रत समिति, अनिल शर्मा (राज्यमंत्री), नगरपालिकाध्यक्ष राजकरण चौधरी, व्यवस्था समिति अध्यक्ष बाबूलाल बोथरा, तेयुप अध्यक्ष राजीव दुगड़, सभा मंत्री पारस बुच्चा, नगरपालिका उपाध्यक्ष व मुस्लिम समाज के प्रतिनिधि अब्दुलरशीद, आचार्य महाप्रज्ञ अध्यात्म सेंटर के संयोजक मदनचंद दुगड़ एवं सुमतिचंद गोठी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर के विहार मार्ग में जगह-जगह सभी संप्रदायों के लोगों ने भाव भरा स्वागत किया। चारों ओर हर्ष की लहर दौड़ रही थी। मुख-मुख पर एक ही नाम था—नेमाजी रे लाल ने घणी-घणी खम्मा।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि सरदारशहर का लाल कमाल कर सरदारशहर आया है। देश-विदेश की यात्रा कर, जन-जन के मन में जागृति का जोश जगाया है।

अंतिम सांस तक श्रावकत्व को सुरक्षित रखने का प्रयास हो : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, ३० अप्रैल, २०२२

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने तीर्थंकर की वाणी का रसास्वादन करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में राग भी होता है। कई बार द्वेष भी आ जाता है। स्नेह-भाव भी होता है। जब तक मनुष्य वीतराग नहीं बन जाता और छठे गुणस्थान में होता है, तब तक किसी पदार्थ के प्रति आकर्षण हो गया, मोह हो गया या द्वेष हो गया या स्नेहभाव प्रकट हो गया, ऐसी स्थितियाँ हो सकती हैं।

छठा गुणस्थान एक ऐसा स्थान है कि साधु होने पर भी प्रमाद-गलतियाँ हो सकती हैं। सातवें गुण स्थान से साधु के प्रवृत्ति कोई अशुभ योग रूप में नहीं हो सकती। छठे गुणस्थान में साधु वंदनीय-पूजनीय है। बहुत निर्मलता भी हो सकती है, परंतु योगरूप प्रमाद-गलतियाँ हो सकती है। छोटे-छोटे दोष लग जाते हैं, पर उनका परिमार्जन करने का प्रयास करना चाहिए।

साधु के बड़ी गलती हो जाने से उसका साधुपन भी जा सकता है, फिर उसे नए रूप में दीक्षा क्रम में आना पड़ता है। ये राग-द्वेष ऐसे तत्त्व हैं, जो आदमी से व साधु से भी गलतियाँ करा देते हैं। गृहस्थ भी जो साधनाशील है, अपने जो व्रत-नियम लिए हुए हैं, उनमें जागरूकता रहे, उनमें दोष न लगे। दोष लग जाए तो उसका प्रायश्चित्त करने की भावना रखनी चाहिए। आलोयणा गुरु या चारित्रात्मा से ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। गिरने के भय से चलना नहीं बंद करना चाहिए। थोड़ी सावधानी रखो, संभल जाओ।

राग-द्वेष कर्म के बीज हैं। ये जितने हल्के पड़ेंगे आत्मा शुद्ध बन सकेगी। शुद्धता की दिशा में आगे बढ़ सकेगी। आचार्य भिक्षु एवं विजय सिंह पटवा के सामायिक रुपये की थैली वाले प्रसंग से समझाया कि रुपयों की चिंता छोड़ सामायिक पर ध्यान दें। संपत्ति से ज्यादा सामायिक का महत्त्व है।

श्रावक के जो व्रत-नियम लिए हुए हैं, उनमें निर्मलता-निर्दोषता रहे। जीवन में कोई पंचेंद्रिय जीव की हिंसा हो जाए या करवानी पड़े तो बाद में उसकी आलोयणा ले शुद्धि करानी चाहिए। कपड़े या पैर गंदे हो जाएँ तो उन्हें धोकर साफ किया जा सकता है। संयम भी कपड़े की तरह है, उस पर अगर दाग लग जाए तो उसे प्रायश्चित्त लेकर धो डालना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 मई, 2022

✦ *बाल पीढ़ी को लौकिक विद्या के साथ अलौकिक विद्या (आध्यात्मिक विद्या) का भी शिक्षण और प्रशिक्षण मिलना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आध्यात्मिक अनुष्ठान से प्रारंभ हुआ नव वर्ष

भुवनेश्वर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में और कनिका महारानी की मंगल उपस्थिति में नवरात्रा आध्यात्मिक अनुष्ठान, तप अभिनंदन तथा नव वर्ष पर वृहद मंगलपाठ का आयोजन उत्कल रॉयल स्थित कनिका महाराज निवास स्थल में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि मानव जीवन का उद्देश्य है—आत्म साक्षात्कार, आत्म साक्षात्कार का उपाय धर्म है। मुनिश्री ने कहा कि शक्ति को पहचानने व जागृत करने का समय नवरात्रा है। गुरुदेव तुलसी ने शक्ति विकास हेतु नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का शुभारंभ किया था।

इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी, तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया, तेरापंथ भवन समिति अध्यक्ष सुभाष भूरा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला, अमरचंद बरड़िया, आनंद बरड़िया, प्रिया बरड़िया, लावण्या, मुक्ता बरड़िया, दिव्यांक गोलेच्छा ने तप अनुमोदना में अपने विचार रखे। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। तेरापंथ सभा की तरफ से महारानी वह तपस्वी दक्ष का सम्मान किया गया। मुनि परमानंद जी ने आध्यात्मिक अनुष्ठान कराया।

अंतिम सांस तक श्रावकत्व को सुरक्षित रखने...

(पृष्ठ ३ का शेष)

श्रावकत्व मिलना भी एक अच्छी उपलब्धि है। श्रावक होना एक पद पर होने के समान है और पद तो जा सकता है, अस्थिर है, पर श्रावकत्व को बचाकर रखें। अंतिम श्वास तक श्रावकत्व सुरक्षित बना रहे। मेरी देव, गुरु और धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा बनी रहे। वीतराग ने जो कह दिया वो ही सही है। यथार्थ की श्रद्धा रहे।

श्रद्धा के साथ ज्ञान भी रहे। श्रद्धा समझपूर्वक हो। तत्त्व को, जीव-अजीव को, आत्मा को समझने की भावना रखें। पूज्य डालगणी व वीरचंद भाई के प्रसंग से समझाया कि श्रावक को तत्त्व को समझकर श्रद्धा स्वीकार करनी चाहिए। अगर बात सही है, तो उसका खंडन भी नहीं करना चाहिए। श्रद्धा-ज्ञान के साथ क्रियाएँ भी हों तो श्रावकत्व में परिपूर्णता आ जाती है। जैसे खीर में दूध के साथ चावल भी है, चीनी भी है, तो खीर स्वादिष्ट बन सकती है। इसी तरह श्रावकत्व में श्रद्धा भी हो, ज्ञान भी हो और क्रिया भी हो।

राग-द्वेष जितने कम होते हैं, तो श्रद्धा भी अच्छी, ज्ञान भी अच्छा और साथ में क्रिया भी अच्छी हो तो श्रावकत्व में अच्छा निखार आ सकता है।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि दुनिया में दुःख है, यही सत्य है। ये संसार अध्रुव, अशाश्वत और दुःख बहुल है। दुःख अनेक कारण से हो सकता है। जन्म, जरा, रोग और मृत्यु दुःख है। दुःख का मूल कारण है—इच्छाएँ-कामनाएँ। आकाश के समान इच्छाएँ अनंत हैं। इच्छाएँ अनेक प्रकार की हो सकती हैं—जैसे—आध्यात्मिक-आत्मिक सुख पाने की इच्छा, लक्ष्य को प्राप्त करने की इच्छा और भौतिक सुख पाने की इच्छा। तृष्णापूर्ण इच्छाएँ ज्यादा दुःखी बनाती हैं। जरूरत पूरी हो सकती है, इच्छा नहीं।

पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में नरेंद्र दुगड़, विकास बेद, सरिता सामसुखा, शहजाद-युवान, उषा बरड़िया, कल्पना सेठिया, अंतिमा नखत ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि व्यक्ति की बोली से पता चल जाता है कि वह कैसा है।

सक्षमता में शांति रखना बड़ी बात...

(पृष्ठ २ का शेष)

छोटा सा सूत्र है, कोई खास बात नहीं। इसे समझकर बात को छोड़ दो। अपनी आलोचना का जवाब अच्छे कार्य से दें। इससे विरोधी भी प्रशंसक बन सकते हैं। किसी के कहने से आदमी खराब नहीं होता। हमें क्षमा धर्म को जीवन में धारने का, प्रयुक्त करने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि मैं धर्म को जानता हूँ, पर मेरी उसमे प्रवृत्ति नहीं है। मैं अधर्म को जानता हूँ पर मेरी उससे निवृत्ति नहीं है। अच्छाई को जानता है, पर आचरण नहीं करता है। बुराई को भी जानता है, पर छोड़ता नहीं है। बड़ी बुराई अन्जान में नहीं होती, उसके पीछे कार्य करता है—मोहकर्म। व्यक्ति चाहे तो कषायों को उपशांत कर सकता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी वीरप्रभाजी ने अपनी भावना रखी। सरदारशहर की उपासक श्रेणी द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई। नेहा दुगड़, सुमन भंसाली, मनीषा बेद, विनीता दफ्तरी व भानुप्रताप बरड़िया ने भी गीत की प्रस्तुति दी।

मुनि दिनेश कुमार जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए साधुचर्या के बारे में समझाया।

सरदारशहर में धार्मिकता एवं निवासियों में...

(पृष्ठ २ का शेष)

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारा जीवन दो तत्त्वों से बना हुआ है। दो तत्त्वों का संयोग हमारे जीवन में है। एक तत्त्व आत्मा। दूसरा तत्त्व है शरीर। इन दोनों के योग से हमारा जीवन बना हुआ है। दोनों में एक भी न हो तो जीवन नहीं होता।

सिद्ध परमात्मा अशरीरी है, वहाँ आत्मा है, शरीर नहीं है। मृत व्यक्ति का सिर्फ शरीर है, आत्मा नहीं है। आत्मा और शरीर का संयोग जीवन है, वियोग मृत्यु है। आत्मा और शरीर का आत्यांतिक वियोग हो जाए, उसका नाम मोक्ष है। वापस कभी शरीर आत्मा से नहीं जुड़ता है।

शरीर और आत्मा इन दोनों में बड़ा अंतर है। शरीर अपने आपमें निर्जीव है। आत्मा सचेतन है। शरीर अस्थायी है, आत्मा स्थायी है। आत्मा अछेद्य अदाह्य, अकाट्य है। आस्तिक दर्शन का सिद्धांत है—आत्मा अलग, शरीर अलग। दोनों एक नहीं हैं।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि आचार्यप्रवर तनावमुक्त जीवन जीने के लिए तीन बातें बताते हैं—एचपीएस यानी हैप्पीनेस (प्रसन्नता), प्रायोरिटी (प्राथमिकता) और सेक्रीफाइस (समझौता कर लेना)।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मंजु कोचर, मुदिता छाजेड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जिसके जीवन में तत्त्वज्ञान है, वह आगे बढ़ सकता है।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्रीजी के प्रति

साध्वी गण में समा गई

● **साध्वी कुंदनरेखा, साध्वी सौभाग्ययशा** ●

महाप्रयाण शासनमाता का, सुन उदासी छा गई,
सुन उदासी छा गई, मायूसी गण में आ गईऽऽऽ
महानिदेशिका महाश्रमणी जी, गण बगिया महका गई,
जीवन पावन खिलता गुलशन, भिक्षु शासन चमका गई।
भिक्षु शासन चमका गई, सबके हृदय को लुभा गई।।आं।।

नाम कला और काम कलात्मक, गण में फैलाई कलाऽऽऽ
कार्यशैली थी कलामय, गुरुओं के मन भा गई।।

साध्वी गण की शान थी तुम, साध्वी गण की आन थीऽऽऽ
साध्वी गण की प्राण थी तुम, साध्वी गण में समा गई।।

क्षमता तेरी थी गजब की, ममता का नहीं पार थाऽऽऽ
नम्रता-समता की सूरत, करुणा स्रोत बहा गई।।

परख गहरी, दृष्टि पैनी, चिंतन गणति नित चलाऽऽऽ
तब साहित्य ये जग दिवाना, ज्ञान खजाना लुटा गई।।

अमल धवल था आभामंडल, अविरल स्नेह झरना झरताऽऽऽ
विनय समर्पण था अनूठा, संयम से सरसा गई।।

असाधारण साध्वीप्रमुखा, आशीर्वर गुरु का मिलाऽऽ
असाधारण जीवन तेरा, दुनिया देख चकरा गई।।

अमृत महोत्सव चयन दिन का, मन भावन वो सीन थाऽऽ
गुरु किरपा की अमृत विरखा, अमृत रस बरसा गई।।

उग्र विहार कर शीघ्र पधारे, अति किरपा गुरुदेव की
अंतिम श्वास गुरु चरण शरण में नव इतिहास रचा गई।
राजधानी दिल्ली की धरा पर, अलविदा तुम कह गई।।

लय : सांवरी सूरत पे---

नववर्ष पुरुषार्थमय बना रहे

चेन्नई।

तेरापंथ परिवार नार्थ टाउन के तत्त्वावधान में आयोजित नूतन वर्ष शुभागमन के अवसर पर चेन्नई नार्थ टाउन जैन संघ के विशाल हॉल में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने विविध प्रभावक जैन मंत्रों के साथ वृहद मंगलपाठ का श्रवण करवाया।

साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी सिद्धियशाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी एवं साध्वी शौर्यप्रभाजी ने साध्वी मंगलप्रज्ञाजी द्वारा रचित शुभकामना गीत का सामुहिक संगान किया। साध्वी राजुलप्रभाजी ने कहा कि आज का यह पवित्र दिन प्रवर संकल्पों का दिन है। तेरापंथ परिवार नार्थ टाउन के अध्यक्ष संपत सेठिया ने संपूर्ण परिषद का भावपूर्ण स्वागत किया। तेरापंथ सभाध्यक्ष चेन्नई से प्यारेलाल पितलिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि उत्तर तमिलनाडु प्रांत प्रचारक रविकुमार ने षाष्टांग वंदन करके अपनी श्रद्धा व्यक्त की। साध्वीवृंद द्वारा महावीर स्तवन से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। साहुकारपेट ट्रस्ट भवन में मैनेजिंग ट्रस्टी विमल चिप्पड़ एवं तेरापंथ सभा के मंत्री गजेंद्र खाटेड ने मुख्य अतिथि का जैन पट्ट एवं साहित्य से सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शौर्यप्रभाजी ने किया। आभार ज्ञापन नार्थ टाउन तेरापंथ परिवार के मंत्री पुखराज पारख ने किया।

मंगल विहार व आध्यात्मिक मिलन

सरदारपुरा।

साध्वी जिनबाला जी ने रातानाडा स्थित उम्मेद हेरिटेज से श्रावक समाज के साथ विहार कर तेरापंथ भवन अमरनगर पधारे। वहीं पर साध्वी कमलप्रभाजी व साध्वी उर्मिला कुमारी जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। इस अवसर पर साध्वीवृंद द्वारा स्वागत गीतिका का संगान किया गया।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के आयोजन

हम अपने ज्ञान और पुरुषार्थ का सही दिशा में नियोजन करें

दिल्ली।

साध्वी शुभप्रभाजी के सान्निध्य में महरोली में भगवान महावीर जन्म जयंती का कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी शुभप्रभाजी ने कहा कि आज भगवान महावीर की जन्म जयंती नहीं बल्कि हम सबकी जन्म जयंती है, क्योंकि उन्होंने अनेकांत, अहिंसा, अपरिग्रह की महान देन युग को दी। उन्होंने कहा कि महावीर जयंती मनाने के लिए हमें अपने ज्ञान और पुरुषार्थ का सही दिशा में नियोजन करना होगा। कम से कम एक घंटे चौविहार तप, एक घंटे मौन, एक दिन प्रतिक्रिया मुक्त, २ व्यक्ति की दिन में निःस्वार्थ सेवा का लक्ष्य बनाए। केक काटने की जगह जोड़ने का प्रयत्न करें। प्रतिदिन नया ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करें।

साध्वी कांतयशाजी, साध्वी मंदारयशाजी, साध्वी अनन्यप्रभाजी ने विचार व्यक्त किए। दिल्ली सभा संरक्षक कन्हैयालाल जैन, सभाध्यक्ष जोधराज बैद, कल्पना सेठिया, माया दुगड़, मुख्य अतिथि के०सी० जैन, आरएसएस जिला संचालक सुनील सेठिया ने विचार व्यक्त किए। उपाध्यक्ष विमल बैंगाणी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के संदेश का वाचन किया।

ज्ञानशाला के बच्चों ने १४ स्वप्नों एवं नुक्कड़ नाटिका की प्रस्तुति दी। एनसीआर महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। महामंत्री डालमचंद ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन शिल्पा बैद ने किया।

भगवान महावीर का जन्म कल्याणक दिवस

इचलकरंजी।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस एवं साध्वी प्रमिला कुमारी जी के ५० वर्ष संयम पर्याय पूर्ण होने के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन दो चरणों में किया गया। साध्वीश्री के मंगल मंत्रोच्चार के बाद तेयुप के मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

इस अवसर पर पश्चिम महाराष्ट्र एरिया सभा अध्यक्ष व कोल्हापुर सभा अध्यक्ष उत्तमचंद पगारिया, इचलकरंजी सभा अध्यक्ष महावीर आंचलिया, सभा मंत्री व महासभा कार्यकारिणी सदस्य पुष्पराज संकलेचा, महिला मंडल अध्यक्ष व अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य जयश्री जोगड़, तेयुप अध्यक्ष मुकेश भंसाली, जयसिंहपुर सभा अध्यक्ष विजयसिंह रूणवाल और महिला मंडल अध्यक्षा मुंजु बरड़िया ने अपने-अपने भावों की अभिव्यक्ति करते हुए भगवान महावीर के प्रति अपनी भावांजलि अर्पित की।

स्थानीय महिला एवं जयसिंहपुर महिला मंडल ने ने गीत के माध्यम से वातावरण को गुंजायमान किया। साध्वी आस्थाश्री जी और साध्वी विज्ञप्रभा जी ने शब्दचित्र के माध्यम से भगवान महावीर के संदेश को उजागर किया। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने कहा कि आज का दिन समस्त जैन समाज के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि महावीर का जन्म, शक्ति का जन्म है, उनका जन्म भक्ति का जन्म है, संस्कृति का जन्म है, सुख, शांति व आनंद का जन्म है। इचलकरंजी सभा सह-सचिव राजेश सुराणा के आभार ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का प्रथम चरण संपन्न हुआ।

दूसरे चरण में साध्वी विज्ञप्रभा जी ने मुख्य नियोजिका जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया। साध्वी आस्थाश्री जी और साध्वी विज्ञप्रभाजी ने साध्वी प्रमिलाकुमारी जी का संक्षिप्त जीवन-वृत्त उजागर करते हुए साध्वीश्री का अभिवादन किया।

साध्वीश्रीजी के नातिले परिवार-भाई केसरीचंद आदि ने भी भाषण, गीतिका, मुक्तक आदि के माध्यम से अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की। साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने अपने अनुभवों का पिटारा खोला और गुरुत्रय, शासनमाता महाश्रमणीजी, उदारस्पद मुख्य मुनि, मुख्य नियोजिकाजी, साध्वीवर्याजी और अन्य साध्वियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी आस्थाश्री जी ने किया।

महावीर अवतरण अहिंसा का अवतरण था

सांताक्रुज।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में महावीर जयंती का आयोजन संपन्न हुआ। पाठक पोलिटेक्निक ट्रस्ट के विशाल सभागार में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने मानव मात्र को शांति का संदेश दिया। आज उनके सिद्धांतों की सर्वाधिक अपेक्षा है।

प्रबुद्ध साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभाजी ने संयोजन में कहा कि महावीर अवतरण अहिंसा का अवतरण था। भगवान महावीर ने साधना की आंच पर स्वयं को तपाया व जग को जीने की राह दिखाई।

समारोह के मुख्य अतिथि पूनम महाजन ने भगवान महावीर की अर्चना की। पूनम ने कहा कि साध्वीश्री जी का ओजस्वी उद्बोधन सुनने का मुझे आज परम सौभाग्य मिला है।

कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदन तातेड़, महासभा के उपाध्यक्ष अशोक तातेड़, अभातेयुप के सहमंत्री भूपेश कोठारी, टीपीएफ के मनीष कोठारी, महासभा के आंचलिक प्रभारी दिनेश सुतरिया, समण संस्कृति संकाय से प्रेमलता सिसोदिया, स्थानीय सभाध्यक्ष पवन बोहरा, तेयुप अध्यक्ष किरण परमार, तेमम संयोजिका ममता कोठारी आदि ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

इस अवसर पर साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी। तेमम, सांताक्रुज की संगायक बहनों ने गीत से सबका मन मोहा।

सभा परिवार की ओर से समागत अतिथिगण का पचरंगे दुपट्टे व मोमेंटों से सम्मान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन राजेंद्र नौलखा ने किया। संचालन साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभाजी ने किया। स्थानीय ज्ञानशाला के बच्चों व कन्या मंडल की प्रस्तुति आकर्षक रही।

भारतीय जनता पार्टी, मुंबई के उपाध्यक्ष अमर सिंह एवं गाला फाउंडेशन के महेंद्र गाला का दुपट्टे व मोमेंटों से सम्मान किया गया। कार्यक्रम की सफलता में सांताक्रुज के कार्यकर्ताओं का श्रम रहा।

व्यापारी व्यापार में प्रामाणिकता रखें

भुवनेश्वर।

मुनि जिनेश कुमार जी ने उड़ीसा में तेरापंथ भवन में किराणा व्यापारियों के मध्य कहा कि दुनिया में तीन शक्तियाँ हैं–अध्यात्म की, सत्ता की, धन की। इन तीन में सर्वश्रेष्ठ व महत्त्वपूर्ण शक्ति है–अध्यात्म की। अध्यात्म की शक्ति अद्वितीय व अनुपम है। अध्यात्म का अर्थ है आत्मा के आसपास रहना।

मुनिश्री ने आगे कहा कि व्यापारी समाज का अभिन्न अंग है। व्यापारी के पास बुद्धि होती है वह बुद्धि का सदुपयोग करे न कि दुरुपयोग करे। व्यापारी ग्राहक के साथ अच्छा व्यवहार रखे। इस अवसर पर किराणा मर्चेन्ट के अध्यक्ष खंडेलवाल ने विचार रखे। मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला ने विचार रखे व मंत्री पारस सुराणा ने मुनिश्री का परिचय दिया। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी व मुनि कुणाल कुमार जी आदि उपस्थित थे।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

गुरुग्राम।

बोरावड़ निवासी, गुरुग्राम प्रवासी सुमेरमल विमला देवी गेलड़ा की सुपौत्री व अमित ज्योत्शना गेलड़ा की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुशील डागा व संस्कारक अनिल सेठिया ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

तेयुप दिल्ली की तरफ से आभा ज्ञापन किया गया। व गेलड़ा परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

गेलड़ा परिवार की तरफ से पधारे हुए सभी संस्कारकों व मेहमानों का आभार ज्ञापन किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

दिल्ली।

गजेंद्र प्रतीक दुधोड़िया के नूतन व्यावसायिक प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक कमल सेठिया व तेयुप दिल्ली के सहप्रभारी संस्कारक मनीष बरमेचा ने मंत्रोच्चार द्वारा जैन संस्कार विधि से संपादित करवाया।

तेयुप दिल्ली की तरफ से दुधोड़िया परिवार का आभार व्यक्त किया व मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

सूर्यनगर।

सरदारशहर निवासी, सूर्यनगर, यूपी प्रवासी महेंद्र सुधा देवी घीया की सुपौत्री व गुलशन सुरभि घीया की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुभाष दुगड़ व सहयोगी संस्कारक की भूमिका आशीष बैद ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

तेयुप दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापन किया गया। घीया परिवार कर तरफ से आशीष बैद ने पधारे हुए सभी संस्कारों व मेहमानों का आभा ज्ञापन किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

दिल्ली।

ताराचंद भरत-दीपक कुमार छाजेड़ के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ उपासक व संस्कारक राजकुमार जैन व संस्कारक अशोक सेठिया ने मंत्रोच्चार व विधिवत जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप दिल्ली की तरफ से छाजेड़ परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया व आभार व्यक्त किया गया। छाजेड़ परिवार व सभी पारिवारिकजनों ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान किए।

नूतन गृह प्रवेश

नालासोपारा (मुंबई)।

जुगराज रूपलाल धाकड़ निवासी शिशोदा (नालासोपारा) का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से हुआ। जैन संस्कारक पारस बाफना निवर्तमान तेयुप अध्यक्ष ने विधिवत मंत्रोच्चार द्वारा नूतन गृह प्रवेश संपन्न करवाया।

सभा मंत्री लक्ष्मीलाल मेहता, महिला मंडल से लक्ष्मी देवी मेहता, ज्योति हिरण, तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी, तेयुप निवर्तमान मंत्री जितेश हिरण आदि ने इस अवसर पर भाव व्यक्त किए। इस अवसर पर अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

नूतन गृह प्रवेश

पूर्वांचल-कोलकाता।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी उत्तम बोथरा का नूतन गृह प्रवेश अभातेयुप उपासक संस्कारक सुरेंद्र कुमार सेठिया ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा संपादित करवाया।

कार्यक्रम में परिवारजनों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 मई, 2022

✦ *आप किसी को मानते हो या नहीं मानते हो पर आप जो कुछ करते हो, उसमें नैतिकता व प्रामाणिकता को रखने का प्रयास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

परचम केसरिया शक्ति का कार्यशाला का आयोजन

गुरुग्राम।

अभातेममं के निर्देशन में गुरुग्राम महिला मंडल द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया की अध्यक्षता में 'परचम केसरिया शक्ति का' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनों द्वारा गीतिका के संगान से की गई।

मुख्य अतिथि मधु आगाज ने केसरिया परिधान के साथ कार्यक्रम में भाग लेने हेतु महिला मंडल के कार्यों की सराहना की। राष्ट्रीय ट्रस्टी पुष्पा बेंगानी ने संविधान की जानकारी दी। राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने कहा कि तेरापंथी बहनें केसरिया परिधान के परचम को अपने दायित्व, धैर्य और वात्सल्य के साथ फहरा सकती हैं, हमें सभी को इस बात का विवेक रखना चाहिए कि हमें कब केसरिया परिधान पहनना और कब नहीं। खुला मंच कार्यक्रम में बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

तत्त्वज्ञान की राष्ट्रीय संयोजिका मंजु भूतोड़िया ने तत्त्वज्ञान की परीक्षा की विस्तृत जानकारी दी। कुसुम बैंगानी ने बताया कि तत्त्वज्ञान का पेपर कैसे बनाया और जाँचा जाता है। सुमन नाहटा ने कन्या सुरक्षा सर्कल के बारे में जानकारी दी। सुनीता जैन ने बहनों को वक्तव्य कला के बारे में बताया और कहा हमें अपने इतिहास को भी संजोए रखना चाहिए।

कार्यक्रम में गुरुग्राम कन्या मंडल का भी गठन किया गया, खुशबू कोचर को कन्या मंडल संयोजिका का दायित्व दिया गया। कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी ने कन्या मंडल की जानकारी दी। शिल्पा बैद ने बताया कि युवा पीढ़ी को किस तरह जोड़ा जाए।

इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ की कार्यकारिणी की बहनों के साथ गुरुग्राम महिला मंडल की संरक्षिका शशि जैन, निवर्तमान अध्यक्ष मधु बोथरा, उपाध्यक्ष कुसुम दुगड़, कमला दस्साणी, पुष्पा कुंडलिया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थित रही। स्नेह प्रोजेक्ट के अंतर्गत कैप्टन चंदनलाल अंधविद्यालय गुरुग्राम के दिव्यांग बच्चों को पढ़ने हेतु सामग्री महिला मंडल द्वारा सभी के सहयोग से प्रदान की गई। बच्चों ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। विनोद बाफना और रूबी बाफना ने पिता मदनलाल बाफना की प्रथम पुण्यतिथि पर भावना चौका में धनराशि का विसर्जन किया। जसोल निवासी गुरुग्राम प्रवासी बहन पिंकी चोपड़ा के वर्षीतप का अभिनंदन किया, नीलम सेठिया ने तप अनुमोदना में गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मंजु जैन ने किया। प्रचार-प्रसार मंत्री निर्मला दुधेड़िया ने पधारे हुए अतिथि एवं सभी का आभार ज्ञापन किया।

परिहार पाप का, निखार आत्मा का

विजयनगर, बैंगलोर।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा तेरापंथ सभा भवन में सामुहिक नमस्कार महामंत्र की स्वर लहरियों द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण मंडल की बहनों द्वारा किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने स्वागत भाषण दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया द्वारा छह काय का जो वीडियो हमें प्राप्त है उसे हमें जरूर सुनना चाहिए, मनन करना चाहिए।

विषय प्रस्तुति उपाध्यक्ष महिमा पटावरी द्वारा दी गई जिसमें १८ पापों के नामों का उल्लेख करते हुए उनकी संक्षिप्त जानकारी दी। मुख्य वक्ता अभिलाषा डांगी जिनका परिचय कार्यकारिणी बहन अनीता जीरावाला द्वारा दिया गया। अभिलाषा डांगी ने बहनों को प्रशिक्षण देते हुए १८ पाप की विस्तृत जानकारी दी।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष मंजु गादिया द्वारा किया गया। अच्छी संख्या में बहनों की उपस्थिति रही।

रूपांतरण शिल्पशाला कार्यशाला का आयोजन

हासन।

अभातेममं के निर्देशानुसार स्थानीय तेरापंथ भवन में रूपांतरण शिल्पशाला के अंतर्गत लेश्या और ध्यान की कार्यशाला का आयोजन किया गया। नवकार मंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से सभा भवन को गुंजायमान किया। अध्यक्ष संगीता कोठारी ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए प्रेक्षाध्यान, श्वास प्रेक्षा अनेकांत क्षमाशीलता, मैत्री, करुणा की अनुप्रेक्षा करने की सलाह दी।

सपना सुराणा ने गीतिका से छहों लेश्या को समझाया। मंत्री विनीता सुराणा ने व्यावहारिक जीवन में लेश्या और ध्यान के मर्म को समझाते हुए नारी लोक का वाचन किया। ललिता सुराणा ने अपने लिचार व्यक्त किए। संतोष भंसाली ने ध्यान के चारों प्रकार को समझाया। उमा तातेड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन नम्रता सुराणा ने किया।

बैंच अनावरण

सरदारपुरा।

अभातेममं की महत्त्वपूर्ण योजना, कन्या सुरक्षा योजना के अंतर्गत महिला मंडल, सरदारपुरा, जोधपुर द्वारा चिलका राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में तीन बैंच और वरिष्ठ राजकीय प्राथमिक विद्यालय में तीन बैंच, कुल ६ बैंच लगवाई।

कार्यक्रम में अध्यक्षा सरिता कांकरिया, मंत्री चंद्रा जीरावला, संरक्षिका आशा सिंघवी, कोषाध्यक्ष इंदिरा चोपड़ा, प्रचार-प्रसार मंत्री चेतना जैन, सविता तातेड़, उषा बैद आदि उपस्थित रहे।

मंत्री चंद्रा जीरावला ने बताया कि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अपनी शाखा परिषदों के माध्यम से कन्या सुरक्षा और महिला सशक्तिकरण पर कार्य करती है।

रूपांतरण एक्सप्रेस के अंतर्गत कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के निर्देशन में मुनि निकुंज कुमार जी के सान्निध्य में रूपांतरण एक्सप्रेस के अंतर्गत 'ध्यान स्टेशन' पर पहुँच गई कार्यशाला का आयोजन हुआ।

कार्यशाला का शुभारंभ सामुहिक नमस्कार महामंत्र के साथ महिला मंडल के सदस्यों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। अध्यक्षा सोहनी देवी सालेचा ने सबका स्वागत किया व कार्यशाला विषयक संक्षिप्त जानकारी दी।

मुनि मार्दव कुमार जी ने बताया कि ध्यान क्या है? ध्यान के कितने प्रकार है? आदि के बारे में जानकारी दी।

कार्यशाला में मुनि निकुंजकुमार जी ने चारों ध्यान के बारे में बताया। दीर्घ श्वास प्रेक्षा का प्रयोग करवाया। अनित्य भावना जैसी अनुप्रेक्षा करने के लाभ भी बताए। आभार ज्ञापन मंत्री ममता मेहता ने किया।

समझें रिश्तों की अहमियत को

गुडियातम।

दुनिया में रिश्तों की बहुत अहमियत होती है। रिश्तों में बहुत अहम् रिश्ता होता है पति-पत्नी का। अगर पति-पत्नी में आपसी संतुलन है, आत्मीय भावनाएँ हैं, एक-दूसरे के प्रति समर्पण का भाव है, तो परिवार में निश्चित सुख का साम्राज्य है। यह विचार तेरापंथ भवन में हैप्पी कपल, खुशी डबल कार्यक्रम के अंतर्गत मुनिश्री अर्हत् कुमार जी ने व्यक्त किए।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि हैप्पी कपल, खुशी डबल यह कब होगा सफल-मन में शांति, आनंद रहता है पल पल, दल बल का अहं ईर्ष्या न हो आज और कल, सद्गुणों को अपनाकर अपनी भावना होगी सफल, जीवन में कर्म विसर्जन का भाव हो प्रसन्न, देव गुरु का लो संबल।

मुनि जयदीप कुमार जी ने रिश्तों को मधुर एवं मजबूत बनाने के टॉनिक बताए। कार्यक्रम में जैन ही नहीं अजैन परिवारों ने भी भाग लिया। तेरापंथ सभा ने मुनिवृंद के प्रति कृतज्ञता के साथ धर्मपरिषद का आभार व्यक्त किया।

तेरापंथ प्रबोध प्रतियोगिता का आयोजन

मदुरै।

साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी के सान्निध्य में स्थानीय भवन में तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में तेरापंथ प्रबोध प्रतियोगिता सांयकालीन अर्हत वंदना के पश्चात आयोजन की गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। साध्वी प्रबोधयशाजी एवं साध्वी सन्मतिप्रभाजी ने रोचक तरीके से प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें ज्ञानशाला, कन्या मंडल एवं महिला मंडल की अच्छी सहभागिता रही।

प्रतियोगिता में ४ अलग-अलग राउंड्स रहे। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दीपिका फूलफगर एवं दूसरा स्थान कोमल जीरावला को मिला। सभी ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की, जिनकी प्रेरणा से यह प्रतियोगिता आयोजन हो पाई।

रूपांतरण शिल्पशाला लेश्या कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं की आयोजना में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में रूपांतरण शिल्पशाला लेश्या कार्यशाला नार्थ टाउन में आयोजित की गई। कार्यशाला की शुरुआत साध्वीश्री जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि लेश्या से पहले आत्मा को समझना आवश्यक है। उत्तराध्यायन सूत्र के ३४वें अध्ययन में लेश्या पर विशेष जानकारी दी गई है। स्पर्श, रस, गंध, वर्ण होते हैं रंगों के बिना जीवन नहीं होता।

साध्वी डॉ० राजुलप्रभाजी ने कहा कि जीवन विकास के लिए रंगों का विशेष प्रभाव होता है। स्वप्न के आधार पर भी रंग के द्वारा व्यक्तित्व को पढ़ा जा सकता है। साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने पुरानी ढाल का पुनरावर्तन करवाया। चंचल डागा ने जामुन के पेड़ की कहानी के माध्यम से कार्यक्रम की प्रस्तुति का संचालन किया। वसंता बाबेल ने चैतन्य केंद्र पर नमस्कार महामंत्र के रंगों का महत्त्व बताया।

कार्यक्रम में अभातेममं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन राजेश्वरी रांका ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला मंडल की बहनों के साथ नोर्थ टाउन की बहनों का भी विशेष सहयोग रहा।

राइट माइंड के साथ जीवन जीएँ

मैलापुर, चेन्नई।

जैन स्थानक में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञाजी ने कहा कि जीवन में संगति का बड़ा महत्त्व होता है। व्यक्ति किस की संगति करे, इसका विवेक होना चाहिए। भगवान महावीर ने कहा है कि अपने से अधिक गुण संपन्न व्यक्ति की संगत करो, वैसा ना हो तो समान गुणों वाले व्यक्तियों के साथ संसर्ग करो, वैसा भी संभव न हो तो अकेले यानी एकांत साधना करो, पर गलत या अहितैषी की संगत कभी मत करो।

साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभाजी ने ध्यान के प्रयोग करवाए। साध्वी डॉ० राजुलप्रभाजी ने कहा कि अध्यात्म की शरण ही सच्ची सरण है। आत्म मलिनता को दूर करने की साधना करते हुए सभी जीवन का उत्कर्ष करें, यह हमारी हार्दिक भावना है। पूरा चेन्नई श्रावक समाज साध्वीश्रीजी की प्रेरणा से अपना योगक्षेम करे और विकास करे।

आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान अलंकरण के उपलक्ष्य में

युगप्रधान - आचार्यश्री महाश्रमण

❐ मुनि जिनेश कुमार ❐

युग प्रधान शब्द के सामान्य अर्थ में 'युग' शब्द समय का वाचक है और 'प्रधान' शब्द 'मुख्यता' का वाचक है। यह शब्द मुख्यतया प्रभावशाली जैनाचार्यों के नाम के पहले प्रयुक्त किया जाता है, वह भी कब जब उन्हें शासन प्रभावना के किसी कार्य विशेष के निष्पादित हो जाने की स्थिति में चतुर्विध धर्मसंघ द्वारा अलंकृत, अभिषिक्त कर 'युगप्रधान' के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता हो।

वैसे तो यह महान आचार्यों द्वारा समाज देश दुनिया के हितार्थ किये गए कार्यों के प्रति उनके कर्तृत्व के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति का संसूचक है। गुरु के महान उपकार का शिष्यों पर, समाज पर ऋण रहता है। इस ऋण को चुकाया नहीं जा सकता किंतु अभ्यर्थना, स्तवना, गुणोत्कीर्तना के माध्यम से उपकारी के प्रति अहोभाव प्रकट कर कुछ आत्मतोष तो प्राप्त किया ही जा सकता है। उसी आत्मतोष की प्राप्ति का ही एक उपक्रम है-युगप्रधान सम्मान।

वस्तुतः महापुरुषों को कोई सम्मान की आकांक्षा नहीं होती है वे तो इन सम्मानों, रीति - रश्मों से ऊपर उठे हुए होते हैं किंतु वे धर्मसंघ के आत्मतोष के लिए उनके द्वारा प्रदत्त सम्मान को ससम्मान ग्रहण कर अपने दायित्व के प्रति और अधिक सजग बन जाते हैं।

गौरवशाली परंपरा

जैन इतिहास युगप्रधान आचार्यों की गौरवशाली परंपरा से समृद्ध रहा है। अनेक जैनाचार्यों ने अपने व्यक्तित्व, कर्तृत्व, नेतृत्व व अपनी विविध असाधारण क्षमताओं के माध्यम से तत्कालीन समय में जिनशासन की अपूर्व प्रभावना कर महान सेवा की। जिसके फलस्वरूप युग ने उन्हें युगप्रधान के गौरव भरे अभिधान से अभिहित किया। उन्हीं युगप्रधान आचार्यों की स्वर्ण श्रृंखला की कुछ सुनहरी कड़िया हैं-

(१) आचार्य भद्रबाहु - आगम वाचना देकर चौदह पूर्वों की विशाल ज्ञान राशि की विशिष्ट श्रुत परंपरा को आगे बढ़ाया।

(२) आचार्य शय्यंभव -दशवैकालिक सूत्र की रचना के साथ ही यज्ञनिष्ठ ब्राह्मणों को यज्ञ का आध्यात्मिक रूप समझाकर उन्हें श्रमण धर्म के अनुकूल बनाया।

(३) आचार्य यशोभद्र - याज्ञिकी हिंसा में अनुरक्त क्रियाकाण्डी ब्राह्मणों को अहिंसा और अध्यात्म की और उन्मुख किया।

(४) आचार्य सुहस्ति - मौर्य सम्राट सम्प्रति के माध्यम से जैन धर्म का चारों दिशाओं में अतिशय प्रसार किया ।

(५) आचार्य श्याम - प्रज्ञापना ग्रंथ की रचना कर संघ को तत्वबोध से समृद्ध किया। इस ग्रंथ को उपांग आगम के रूप में मान्यता प्राप्त है।

(६) देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण - विलुप्त होती ज्ञान राशि को वाचना के माध्यम से व्यवस्थित कर श्रुत लेखन का अद्वितीय प्रयास कर श्रुत संरक्षण का महान कार्य किया।

(७) आचार्य सिद्धसेन - सूक्ष्म चिन्तन शैली एवं जागृत प्रज्ञा से 'न्यायावतार' जैसे अनेक दर्शन ग्रंथों का प्रणयन कर जैन शासन को सुदृढ दार्शनिक आधार प्रदान किया।

(८) आचार्य समन्तभद्र - प्रमाण ग्रंथ आप्त मीमांसा की रचना कर तार्किक क्षेत्र में प्रखर तर्कणाओं के माध्यम से युग को तत्त्व समझाने की नवीन दृष्टि प्रदान की।

इसी प्रकार आचार्य भद्रबाहु (द्वितीय) ने निर्युक्ति, जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने भाष्य साहित्य, जिनदास महत्तर ने चूर्णि साहित्य की रचना कर ज्ञान भंडार को समृद्ध किया। नवांगी टीकाकार अभयदेव सूरि, आचार्य हेमचंद्र, आचार्य हरिभद्र, आचार्य आर्यरक्षित, आचार्य जिनदत्त सूरि, आचार्य जिनचन्द्रसूरी आदि अनेक आचार्यों ने अपने दिव्य ज्ञान, व असाधारण प्रतिभा से अनेक विषयों में अपनी अद्भुत मेधा का परिचय देकर जैनशासन की विलक्षण प्रभावना की वे युगबोधक युगप्रधान आचार्य कहलाए।

तेरापंथ और युगप्रधान

तेरापंथ की पुनीत आचार्य पट्टावली में संघ संस्थापक क्रांतिकारी प्रथम आचार्य आचार्य भिक्षु हुए हैं। चतुर्थ आचार्य जयाचार्य धर्मसंघ की आन्तरिक व्यवस्था परिवर्तन क्रांति के सूत्रधार थे। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को भगवान महावीर की आचार पद्धति में ढ़ालते हुए अनेक युगान्त कारी परिवर्तन किये। उनकी अद्भुत मेधाने युगप्रधान की साक्षात अनुभूति धर्म संघ को करवाई थी। बीसवीं शताब्दी में तेरापंथ के नवमें आचार्य आचार्य श्री तुलसी व आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी युगप्रधान अलंकरणों से अलंकृत हुए।

आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ की युगल जोड़ी ने युग की नब्ज को परखकर धर्मसंघ के आन्तरिक विकास को अभिनव आकाश प्रदान किया तो अणुव्रत आंदोलन, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, अहिंसा समवाय, नया मोड़, रूढ़ि उन्मूलन, नारी जागरण, आगम संपादन, साहित्य सृजन, अणुव्रत यात्रा, अहिंसा यात्रा आदि जनकल्याणकारी कार्यों से संघ, समाज, देश व दुनियाँ का अभिनव पथदर्शन किया। उनके मानव हित में किये गए कार्यों की बदौलत धर्मसंघ ने उन्हें युगप्रधान के रूप में अभिषिक्त किया।

युगप्रधानः आचार्य श्री महाश्रमण

युगप्रधान की अनेक कसौटियां हो सकती हैं। मैंने आचार्य श्री महाश्रमण जी को अनेक दृष्टिकोणों से देखने का प्रयास किया। पर वे हर दृष्टिकोण में युगप्रधान ही दिखाई दिए। जिस प्रकार लड्डु को कहीं से भी चखने पर वह मीठा ही लगता है उसी प्रकार आचार्य श्री के जीवन की पुस्तक कहीं से भी पढ़ने पर वह ज्ञानवर्धक व प्रेरक ही लगती है। आचार्य श्री महाश्रमण अगणित विशेषताओं के पुंज हैं। जिस प्रकार लक्षपाक तैल एक लाख औषधियों के सम्मिश्रण से तैयार होता है उसी प्रकार अगणित विशेषताओं के समवाय से आचार्य प्रवर का व्यक्तित्व निर्मित हुआ है। उनके व्यक्तित्व के परिचय मात्र के लिए कुछ गुणात्मक बिंदुओं का स्पर्श करना पसंद करूँगा । यथा -

ज्ञान के हिमालय- आचार्य प्रवर का ज्ञान गहरा व गंभीर है। उनकी धारणा शक्ति प्रखर है। उनके प्रवचनों में आगम ज्ञान की गहराई सहज, सरल शब्दों में प्रकट होती है। उनका ज्ञान स्थिरता लिए हुए है। उनकी अन्तःप्रज्ञा जागृत है उनके ज्ञान को देख कर लगता है कि वे ज्ञान के हिमालय हैं।

दर्शन के दृढस्तंभ - वे आचार्य से पहले एक जैन मुनि है। उनकी जैनागम, जैन धर्म, जैन आराध्य के प्रति सुदृढ आस्था है। उनकी सम्यकत्व विशुद्धि को देखते हुए महसूस होता है कि वे दर्शन के दृढ़स्तंभ है।

चारित्र के चूड़ामणि

चारित्र साधु का असली धन होता है। उसका संरक्षण व संवर्धन करने वाला विशिष्ट होता है। आचार्यप्रवर निर्मल, अनुत्तर चारित्र के धारक हैं। उनका पवित्र व निष्कलंक चारित्र उन्हें चारित्र के चूड़ामणि उद्घोषित करता है।

तप के तीर्थयात्री - तीर्थ वह होता है जहाँ लोग स्नान कर अपने पाप को धो डालने का प्रयत्न करते हैं। आचार्य प्रवर संघ सेवा रूपी महान तप कर रहे हैं। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने उन्हें महातपस्वी के सार्थक संबोधन से संबोधित किया। वे नित्य, प्रतिदिन, प्रतिपल तपोयज्ञ कर रहे हैं। इसलिए वे तप के तीर्थ यात्री बने हुए हैं।

शांति के देवता - तनाव भरे इस युग में हर वर्ग शांति की खोज कर रहा है। आचार्य प्रवर शांति का जीवन जीना पसंद करते हैं। वे स्वयं शांति का जीवन जीते हैं और दूसरे लोगो को भी शांति की राह दिखलाते हैं। उनके चेहरे की मन्द मुस्कान व आभा अशान्त व्यक्ति को भी शान्त बना देती है। जब - जब भी मधुर मुस्कान के साथ उन्हें देखता हूँ तो आभास होता है कि वे शांति के देवता है।

मानवता के मसीहा - पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस के बढ़ते दामों की तरह मानव तो दिन-दिन बढ़ते जा रहे हैं किंतु विलुप्त होती पक्षियों की प्रजातियों की तरह मानवता दिन दिन घटती जा रही है। जिस प्रकार घुसपैठियों की रोकथाम के लिए सीमा पर सेना डटी हुई है उसी प्रकार घटती मानवता की रोकथाम के लिए आचार्यप्रवर जन-जन को जगाने जागरुक प्रहरी बने हुए हैं। उन्होंने मानवता के प्रश्न को सामने रखकर अहिंसा यात्रा की।गाँव-गाँव, नगर नगर, डगर-डगर घूम-घूम कर जनता को सद्भावना ,नैतिकता व नशामुक्ति का संदेश प्रदान कर सोई मानवता को फिर से जगाने के लिए प्राण फूंकने का कार्य किया है। वे मानव मात्र का हित व उत्थान चाहते हैं इसलिए वे मानवता के मसीहा के रूप में नजर आते हैं।

युग चिंतक - आचार्य प्रवर का चिंतन युगानुसार होता है। वे युगीन समस्याओं के समाधान में सदैव जागरूक रहते हैं। समस्याएँ भले समाज की हो या देश की उन पर युगानुकूल चिंतन प्रदान कर आप सबको सच्ची राह दिखलाते हैं। जब गंगाशहर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर भरी सभा में मुरली मनोहर जोशी ने जैनों के अल्पसंख्यक व आरक्षण की मांग के संदर्भ में प्रश्न रखा तब आचार्य प्रवर ने सटीक किंतु समाजहित में जवाब देकर सबको चकित कर दिया। देश के विभिन्न स्थानों पर आप विभिन्न सभाओं में समाधान परक चिंतन प्रस्तुत कर युग चिंतक कहलाए।

महान यायावर- पदयात्रा मुनि जीवन का अनिवार्य अंग है। आचार्य प्रवर ने लगभग ५२ हजार किलोमीटर से अधिक पदयात्रा कर विश्व के मानचित्र पर नई लकीरें खींची है । एक दिन में ४७ किलोमीटर का विहार तो तेरापंथ की आचार्य परंपरा का अभिनव कीर्तिमान है। आपको भारत, भूटान व नेपाल में पदयात्रा करते देख महान यायावर का संबोधन भी छोटा प्रतीत होता है।

शासन प्रभावक

मात्र १२ वर्ष के आचार्य काल में आपने जो शासन की प्रभावना की है वह विलक्षण है। ऐसी प्रभावना जो सैंकड़ों वर्षों के जैन इतिहास में खोजने पर भी मिलना दुर्लभ है। आपकी अहिंसा यात्रा से करोड़ों लोग जैन धर्म से परिचित हुए, लाखों लोग नशामुक्त बनें। लाखों लोग बुराईयों से दूर रहने के लिए संकल्पित हुए। आपने पूरे भारत को अहिंसा के सूत्र में पिरोने का महान यत्न किया । आपके द्वार पर विभिन्न जाति, समाज, धर्म के लोग बिना किसी भेदभाव के आते रहे। आपने भगवान महावीर के अहिंसा धर्म को जैनों की चारदीवारी से बाहर लाकर सार्वजनीन बनाने का प्रयास किया। आपने जैन एकता के लिए साहस का परिचय देते हुए संवत्सरी एकता के लिए अपना कदम बढ़ाया। आप स्थानक, मंदिर, भवन, चर्च, गुरुद्वारा, मस्जिद आदि धर्म स्थानों पर भी मुक्त भाव से सद्भावना का संदेश लेकर गए। आप द्वारा की गई अथक अकथ शासन प्रभावना आपको शासन प्रभावक आचार्य के रूप में स्थापित करती है ।

कुशल अनुशास्ता - तेरापंथ एक आचार्य केन्द्रित धर्मसंघ हैं। यहाँ आचार्य की अनुशासना में पूरा धर्मसंघ चलता है। आचार्यप्रवर ने जब से शासन की बागडोर अपने हाथ में संभाली है तब से शासन के योगक्षेम के लिए अहर्निश प्रयत्नशील है। आप संघ की सारणा - वारणा में दक्ष है। आपके कुशल अनुशासन में पूरा धर्मसंघ प्रगतिशील बना हुआ है। आप सभी को यथाअनुकूलता उपयुक्त समय देने का प्रयत्न करते हैं। संघ के हर सदस्य के स्वास्थ्य, शिक्षा, सेवा के लिए आप हर संभव सहयोग प्रदान करवाते हैं। हर कोई चित्त समाधि में रहे यह आपकी व्यवस्थाओं का आदर्श सूत्र है। ये सभी बातें यह सूचित करती है कि आप कुशल अनुशास्ता हैं।

गुणों के सागर

आचार्य प्रवर गुणों के सागर हैं। आप पृथ्वी के समान सहिष्णु है। आपकी शून्य से समग्रता की यात्रा का मूल आधार विनम्रता, आचार निष्ठा, संघनिष्ठा, पापभीरूता व परोपकारिता है। आप गीतकार, संगीतकार, लेखक, वक्ता, प्रवचनकार, संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, राजस्थानी ,अंग्रेजी आदि भाषाओं के ज्ञाता, जैन सिद्धान्तों के प्रकाण्ड विद्वान हैं। आपकी सहजता, सरलता कोमलता, मृदुभाषिता, मिलन सारिता मन को आकृष्ट करने वाली है। आप की ओजस्विता, तेजस्विता और मनस्विता दर्शनीय है। आपका बाह्य व्यक्तित्व जितना आकर्षक है उससे कई गुना आकर्षक है आपका आन्तरिक व्यक्तित्व। आपका इस जगत में अतिशय प्रभाव है। आप प्रकृष्ट पुण्यों के धारक हैं। आपका विचरण तीर्थंकर युग की याद दिलाता है। आप अल्पभाषी, अल्पभोजी हैं। आप सागर के समान गंभीर, आपके विचार मेरू की तरह ऊँचे व आकाश की तरह व्यापक है।

युगप्रधान अलंकरण स्वयं धन्य बना है आप श्री के चरण युगलों को पाकर के। युगप्रधान पदाभिषेक की पुण्यवेला में युगपुरुष के चरणों में कवि की दो पंक्तियों के समर्पण के साथ कोटि-कोटि प्रणाम

युग प्रवर्तक, युग संस्थापक, युग संचालक हे ! युग प्रधान।

युग निर्माता, युग मूर्ति, तुम्हें युग युग तक युग का प्रणाम।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 मई, 2022

✦ *व्यक्ति अपने गुणों के कारण साधु कहलाता है और अवगुणों के कारण असाधु कहलाता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान अलंकरण के उपलक्ष्य में

नभ झुका नमन करते तुमको

● **शासनश्री साध्वी सुमनश्री** ●

नभ झुका नमन करते तुमको धरती ने पुण्य प्रणाम किया।
इस तेजस्वी संन्यासी को रवि किरणों ने सम्मान दिया।
तब क्षितिज पार गूँजी सरगम।
जय युगप्रधान जय पुरुषोत्तम।।

आस्था की अजब हिलोर उठी
सबकी सीपीसी आँखों में
किस महाशक्ति ने जनम लिया।
परिचर्चा लाखों लाखों में।।
इस अमल धवल कुंदन काया से देख तुम्हारा इतना श्रम।।
जय युगप्रधान जय पुरुषोत्तम।।

जन-जन के प्रश्नों का उत्तर
अद्भुत व्यक्तित्व तुम्हारा है
तुम पूर्ण काम तुम बुद्ध वीर
या महाकाव्य रस धारा है।।
जान सके ना कोई भी तेरे जीवन का अर्थ अगम।।
जय युगप्रधान जय पुरुषोत्तम।।

लगता कोई अवतारी हो
सब पाप-ताप-संताप हरो
आकंठ भरा हूँ मैं विष से
अमृत रस का संचार करो।
पदचिह्नों पर चल पाऊँ मैं कर दो मेरा अब पंथ सुगम।।
जय युग प्रधान जय पुरुषोत्तम।।

सुन आर्त पुकार जमाने की
करुणा की धारा फूट पड़ी
मिल गया स्वयं ही समाधान
दी नैतिकता की दिव्य जड़ी।
छलछला रही जीवन धारा गंगा यमुना सा है संगम।।
जय युगप्रधान जय पुरुषोत्तम।।

युग की इस रीती गागर को
भर दो अब करुणा के सागर
अनगिन कंठों की प्यास बुझे
सुनकर तेरे बासंती स्वर।
उतरे धरती पर चाँद नरवत मावस भी बन जाय पूनम।
जय युगप्रधान जय पुरुषोत्तम।।

सत शिव अक्षय वट छाया से
परितप्त प्राण को छाँह मिली
मरु से सूखे वन प्रांगण में
नैतिक फुलवारी आज खिली।
स्वप्न फला युग मानस का तुम नस सृजन के हो उद्गम।
जय युगप्रधान जय पुरुषोत्तम।।

ज्योतिर्मय आभा मंडल के
आगे झुकता है कौन नहीं?
जो आता सब कुछ पाता है
नेहिल नजरें यह बोल रही।
हिंसा पर विजय अहिंसा की विभूता का फहराया परचम।
जय युगप्रधान जय पुरुषोत्तम।।

युग के पृष्ठों पर एक नया
इतिहास लिखा यह जाएगा
तुमसे पा पथ दर्शन भारत
फिर विश्व गुरु कहलायेगा।
जन-जीवन यह अभिस्नात हुआ तुम पावन तीरथ हो जंगम।
जय युगप्रधान जय पुरुषोत्तम।।

माँगा वरदान प्रभो! तुमसे
शासनमाता ने जिस पल में
खुशियों के आँसू छलक पड़े
जो छुपा लिए थे आंचल में।
सबके दिल भीग गए थे तब यह याद रहेगी जनम-जनम।।
जय युगप्रधान जय पुरुषोत्तम।।

शत-शत वंदन

● **साध्वी संवरविभा** ●

नेमा के नंदन को करते शत् शत् वंदन
भक्ति के पुष्पों से श्रद्धा अभिनंदन।

स्वर ये सरगम के सब बोले हैं, सुन-सुन-सुन-सुन
षष्ठी-पूर्ति मनाएं प्रभुवर को बधाएं।
प्रभुवर को बधाएं मंगल तिलक लगाएं।।

संयम की सुरभि से स्वस्तिक सुमन सजाएं
क्रांति के कदमों में विजय ध्वजा फहराएं।
स्वर ये प्रगति के सब बोले है, जय-जय-जय-जय

मन के मंदिर में प्रभु तेरा रूप सुहाएं
नयनों में करूणा की अमृत धार बहाएं
स्वर ये प्रणति के सब बोले है, सुन-सुन-सुन-सुन

प्रभु के चरणों में हम करते शुभकामना
रहो निरामय हम पाएं अनुशासना
स्वर ये भक्ति के सब बोले है, जय-जय-जय-जय

पदाभिषेक अभिवंदना युगप्रधान की अर्चना।
युगप्रधान की अर्चना करते शत्-शत् वंदना।

तर्ज : साजनजी घर---

आज बधाई है

● **साध्वी धर्मयशा** ●

युग प्रधान श्री महाश्रमण को, आज बधाई है
श्रद्धा की रंगोली सजा, कलियां हरसाई है।

मां नेमा किस्मत वाली,, गण में दिवाली है
इन्द्र करे अभिषेक, अतिशय गौरवशाली है
झुमर कुल के ओ उजियारे, हद पुष्पाई है।

तेजस्वी आभामंडल से, नव आलोक लुटाएं
प्रज्ञा के मिरनार चढ़े, आशीर्वर हम पाएं
साम्य योग के शिखर पुरुष, महिमा महकाई है।

मंगलमय तेरी शरण, प्रतिपल बढ़ते जाएं
पॉवर हाऊस की ऊर्जा से, ऊर्जास्वर बन जाएं
ज्योतिर्धर तव शुभ्रवलय, छलके अरूणाई है।।

दो पैसे से नापा भारत, चरण-चरण मंगल
चरण शरण में जो भी आए, मिलता नव संकल
त्रयी संकल्पों की सुर सरिता, जग में बहाई है।

शासनमाता ने युग प्रधान का, अलंकरण नवाजा
जुग-जुग-जीओ-ज्योति चरण, महाश्रमण है गणराज
दशो दिशाएं हर्ष बिछाएं, मलय बहारें आई है।

श्रद्धा-विनय-समर्पण श्रम से, कीर्ति फैली सवाई है।
गुंज रही यश गौरव गाथा, मधुर शहनाई है।।

वर्धापना

● **साध्वी प्रियंवदा** ●

प्रमुदित मन से तुम्हें बधाएं
शुभ प्रसंग पर शुभ भावों से शुभं भूयात् घोष लगाएं।।

अतुलित गरिमा अतुलित आभा अतुलित प्रेरक लफ्ज तुम्हारे
बे-नजीर व्यक्तित्व तुम्हारा इक्कीसवीं सदी के ही ध्रुवतारे
महातपस्वी ध्रुवयोगी को मुक्त कंठ से आलम सारा विरूदाएं।।

तुलसी महाप्रज्ञ का तुमने युगल गुरु का पाया साया
अनुभव के नूतन रत्न बटोरे स्नेहिल वरदहस्त की छाया
शांत सुधाकर शुक्ल पक्ष ज्यों बढ़ती चढ़ती रही कलाएं।।

महर भरी मुस्कान तुम्हारी भर देती प्राणों में स्पंदन
भ्रांत क्लांत उत्तप्त हृदय भी बन जाता शीतल चंदन
खुशियों के इन पुण्य क्षणों में गीत सुनाए दशों दिशाएं।।

हे महासूर्य! तेरी किरणों से आलोकित है पुण्य धरा
युग-युग तेरे संरक्षण में चमन रहे यह हरा भरा
अमर रहे गुरु आसन शासन सौगातों का थाल सजाएं।।

खुद को मैं समझाऊं कैसे?

● **साध्वी ऋद्धिप्रभा** ●

अंकित हैं यादों में अनुभव, शब्दों में बतलाऊं कैसे।
वर्तमान वह भूत बन गया, खुद को मैं समझाऊं कैसे।।

सुबह-सुबह छवि दिखती मनहर, श्रुति पद पर गुंजित मधुर स्वर,
'जागृत रहो' शिक्षा शुभंकर देती हमको जो निशि वासर।
स्वयं सो गई चिर निद्रा में, मन विश्वास जगाऊं कैसे?

कलम तुम्हारी प्रिय सहेली, सुलझाती हर कठिन पहेली,
सागर सम चिन्तन की शैली, सृजनशीलता भी अलबेली।
अमर बन गई जन मानस में, उनको मैं विसराऊं कैसे?

गुरुवर कृपा जीवन आश्वास, गुरु सम्मुख अंतिम उच्छ्वास,
युगप्रधान युग का इतिहास, शासनमाता नव पद न्यास।
गुरुत्तर स्थान गुरु हृदय में, गौरव गाथा गाऊं कैसे?

✦ *ज्ञान एक ऐसा तत्त्व है, जो प्रकाश करने वाला होता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण
षष्टिपूर्ति महोत्सव
एवं
युगप्रधान पदाभिषेक पर्व
के पुनीत अवसर पर श्रद्धासिक्त वंदन-अभिनन्दन

: : श्रद्धावनत : :

‘श्रद्धानिष्ठ श्रावक’ स्व. हनुमानमलजी दूगड़ ‘जौहरी’ की पावन स्मृति में

‘श्रद्धा की प्रतिमूर्ति’ गिन्नीदेवी

मदनचंद-सरोजदेवी, आलोक-उषा, अजित-वंदना

अयांश एवं संपूर्ण दूगड़ जौहरी परिवार

मुम्बई सरदारशहर सूरत

✦ मनुष्य जन्म को दुर्लभ कहा गया है। जिन्हें यह प्राप्त है, वे मनुष्य जन्म का मूल्यांकन करना सीखें।
—आचार्यश्री महाश्रमण

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण षष्टिपूर्ति महोत्सव

एवं

युगप्रधान पदाभिषेक पर्व

के ऐतिहासिक अवसर पर भावभरा वंदन-अभिनन्दन

:: श्रद्धावनत ::

बाबूलाल विकास कुमार बोथरा

सरदारशहर कोलकाता

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण के
60वें जन्मोत्सव
एवं
युगप्रधान पदाभिषेक
के मंगल अवसर पर
सादर सविनय वंदन

श्रद्धावनत

रतनलाल - कमलादेवी
चांद देबी (धर्मपत्नी स्व. सुमेरमलजी)
राजकरण-कनकदेवी
विजय -निर्मलादेवी
एवं समस्त सिरोहिया परिवार

कोलकाता सिलचर सरदारशहर

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ

आचार्यश्री महाश्रमण
षष्टिपूर्ति महोत्सव
एवं
युगप्रधान पदाभिषेक पर्व
के पुनीत अवसर पर श्रद्धासिक्त वंदन-अभिनन्दन

: श्रद्धानत :

सम्पतमल, धनराज, बाबूलाल डागा
अशोक कुमार-कुसुम, रंजीत-ऋतु, श्रेयांश-श्वेता
सुमित-शोभा, संदीप कुमार-सुनीता
चिराग, ऋषभ, सुजल, कुश डागा

सरदारशहर कोलकाता मदुरै

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 मई, 2022

✦ *देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण
षष्टिपूर्ति महोत्सव
एवं
युगप्रधान पदाभिषेक पर्व
के पावन अवसर पर भावभीनी वंदना

:: श्रद्धावनत ::

चैनरूप-लक्ष्मी चिंडालिया
आदित्य-हर्षिता चिंडालिया
सरदारशहर कोलकाता

आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के आयोजन

मदुरै

स्थानीय तेरापंथ भवन में साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी के सान्निध्य में अभिनिष्क्रमण दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महाश्रमण अष्टकम् से पुलकित बोकड़िया एवं लक्ष्य जीरावला ने किया। साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ का ऐतिहासिक दिवस है रामनवमी, सत्यानवेशी, आचार्यश्री भिक्षु ने सत्य शोध की दिशा में कदम बढ़ाया। नया आलोक प्राप्त किया।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु का जीवन एवं उनका प्रेरक दर्शन व्यक्ति-व्यक्ति के भीतर आज भी अध्यात्म की ज्योति को प्रखर कर रहा है। साध्वी प्रबोधयशा जी ने गीतिका के द्वारा पुरुषार्थ की महागाथा सुनाई। साध्वी सन्मतिप्रभाजी ने कहा कि तेरापंथ एक प्राणवान, तेजस्वी एवं प्रगतिशील धर्मसंघ है। आचार्यश्री भिक्षु के दूरदर्शी चिंतन एवं प्रबल संकल्प की फलश्रुति है तेरापंथ। मदुरै ज्ञानशाला के बच्चों ने अभिनिष्क्रमण दिवस का दृश्य नाट्य प्रस्तुति द्वारा किया। कन्या मंडल एवं महिला मंडल ने गीतिका के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में नेहा दुधेड़िया द्वारा जैन विद्या परीक्षा के प्रमाण पत्र दिए गए। त्रिचि से आए प्रेमचंद सुराणा भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन दीपिका फुलफगर ने किया। महिला मंडल अध्यक्षा नैना पारख, तेयुप अध्यक्ष संदीप बोकड़िया आदि उपस्थित थे।

भुवनेश्वर

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस एवं तप अभिनंदन समारोह का आयोजन कनिका महाराज के निवेदन पर स्थानीय तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कनिका महाराज शिवेंद्र नारायण भंजदेव व महारानी विशेष रूप से उपस्थित थे। इस अवसर पर उत्कल ग्रुप के चेयरमैन सुभाष भूरा, उत्कल रॉयल के अध्यक्ष विनोद अग्रवाल, उपाध्यक्ष महेश, मंत्री नितीन, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला, तेयुप अध्यक्ष विवेक बेताला व महिला मंडल अध्यक्षा मधु गीड़िया आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु तेरापंथ के आद्यप्रणेता थे। उन्होंने विशुद्ध साध्वाचार के पालन के लिए रामनवमी के दिन बगड़ी में धर्मक्रांति हेतु अभिनिष्क्रमण किया। आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व विशिष्ट एवं कर्तृत्व महान था।

कार्यक्रम की शुरुआत बाल मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण भिक्षु गीत से हुई। स्वागत भाषण तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला, तेरापंथ भवन निर्माण समिति के अध्यक्ष सुभाष भूरा तप अभिनंदन में संजय जैन, ललिता सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने व आभार ज्ञापन प्रताप सिंघी ने किया। इस अवसर पर तपस्वियों का संस्थाओं द्वारा सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम के शुरुआत में आध्यात्मिक अनुष्ठान भी कराया गया। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

भीलवाड़ा

शाससनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी 'लाछूड़ा' के सान्निध्य में आर०सी० व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा स्थित जयाचार्य भवन में २६३वें आचार्यश्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के मंगलाचरण एवं 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' के जप के साथ हुआ।

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी ने कहा कि आचार्य भिक्षु आत्मार्थी संत थे। आत्म साधना की बलिवेदी पर सर्वात्मना समर्पित इस महासंत ने श्रद्धा, समर्पण अहं विसर्जन की बुनियाद पर तेरापंथ का भव्य प्रासाद खड़ा किया।

मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने कहा कि आचार्य भिक्षु विराट और उत्तुंग व्यक्तित्व के प्रतीक थे। उनका जीवन प्रकाश और ऊर्जा का पुंज था।

इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मीना बाबेल, ललिता रांका, अनिल चौधरी, उपासक रोशनलाल चिप्पड़, ज्ञानशाला की सह-संयोजिका संगीता चोरड़िया, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी खुशी चोरड़िया, दर्शित चोरड़िया, आरव दुगड़ आदि ने आचार्य भिक्षु पर आधारित कविता, मुक्तक, दोहा व आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए। संजय भाणावत, विनीता भाणावत व बाल कलाकार हीरेन चोरड़िया, दक्ष बड़ोला ने आचार्य भिक्षु पर आधारित प्रस्तुति प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला की संयोजिका सुमन लोढ़ा व आभार ज्ञापन गौतम रांका ने किया।

होसकोटे, बैंगलोर

मुनि अर्हत कुमार जी का बैंगलुरु में रामनवमी एवं तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्य भिक्षु के अभिनिष्क्रमण दिवस पर प्रवेश हुआ। मुनिश्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि संतों का योग व उनका सान्निध्य प्राप्त होना भाग्य नहीं सौभाग्य का सूचक है। उन्होंने कहा आचार्य भिक्षु मर्यादा के शिखर पुरुष थे। जिन्होंने कभी मर्यादाओं से समझौता नहीं किया। उनके जीवन से हमें प्रेरणा लेनी है कि विकट से विकट परिस्थितियों में भी हम मर्यादा में बने रहें।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि भगवान राम की मर्यादा, आचार्य भिक्षु का त्याग, संयम सत्य मुनि अर्हत कमार जी का संयम इस त्रिवेणी से हम अपनी आत्मा की चेतना को उजागर कर सकते हैं। मुनि जयदीप कुमार जी ने कहा कि हमें भीतर की क्रांति कर अंतरस मौजूद परम शांति को प्राप्त करना है। आचार्य भिक्षु ने जो हमारे लिए रास्ता प्रशस्त किया है उसी पर हमें अभिराम बढ़ते रहना है। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। होसकोटे सभाध्यक्ष इंद्रचंद धोका ने स्वागत वक्तव्य दिया। बैंगलोर सभा अध्यक्ष सुरेश दक ने अपना वक्तव्य दिया। तेयुप भजन मंडली प्रज्ञा सगीत सुधा व महिला मंडल, गांधीनगर ने भति गीत का संगान किया। राजाजीनगर सभा अध्यक्ष शांतिलाल पितलिया, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरणा, तेयुप अध्यक्ष विनय बैद, अणुव्रत महासमिति सहमंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़, टीपीएफ प्रधान ट्रस्टी माणक बलदोटा ने भी वक्तव्य दिया।

इस अवसर पर अभयराज कोठारी, महावीर धोका सहित अनेक गणमान्यजन, बैंगलोर, होसकोटे, केजीएफ व अनेक क्षेत्रों से श्रावक-श्राविका उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन धर्मीचंद धोका व नवनीत मूथा ने किया।

टीपीएफ हुनर को प्रदान किया अनुदान

चेन्नई।

म्यूजिक अकेडमी, चेन्नई में आरसीसी फाउंडेशन द्वारा २८वें फाउंडेशन दिवस के उपलक्ष्य में उसकी एक महत्त्वपूर्ण शाखा आरसीसी मैग्नम द्वारा समाजोत्थान कलाओं के विकास के लिए टीपीएफ हुनर के राष्ट्रीय संयोजक अनिल लुणावत एवं चेन्नई चैप्टर के अध्यक्ष राकेश खटेड़ को आर्थिक अनुदान प्रदान किया गया।

टीपीएफ, चेन्नई चैप्टर द्वारा संचालित हुनर, जो समाजोत्थान कलाओं के विकास का पुरजोर प्रयत्न कर आगे बढ़ रहा हैं इसी क्रम में आर्थिक सहयोग प्रदाता कलाओं के विकास में आरसीसी मैग्नम का महत्त्वपूर्ण सहयोग मिला।

अध्यात्म की गंगा में अभिस्नात हुए श्रद्धालु

बांद्रा (मुंबई)।

साध्वी निर्वाणश्री जी का बांद्रा का प्रवास अध्यात्म से ओत-प्रोत रहा। साध्वीश्री जी के शुभागमन से श्रद्धालु भाव विहार हो गए। प्रथम दिवस का प्रवास जितेंद्र परमार के आवास पर रहा। पूरे परिवार ने अत्यंत उल्लास के साथ इस प्रवास का लाभ लिया। साध्वीश्री जी ने स्वागत के प्रत्युत्तर में कहा कि हम पूज्य गुरुदेव का पावन संदेश लेकर आपके मध्य आए हैं। जीवन में पवित्रता, सहजता, श्रमशीलता व नैतिकता की चतुष्पदी हो तो जीवन धन्य हो जाता है। अभातेयुप के प्रकाशन प्रभारी जितेंद्र परमार ने साध्वीवृंद का स्वागत किया।

रूपांतरण की शिल्पशाला : अभातेममं निर्देशित मासिक कार्यशाला 'रूपांतरण' के अंतर्गत 'ध्यान' विषय पर शिल्पशाला समायोजन हुई। साध्वी निर्वाणश्री जी ने ध्यान के भेद-उपभेद बताते हुए प्रशस्त ध्यान से जुड़ने की विधि समझाई। साध्वी लावण्यप्रभाजी ने ध्यान से संबद्ध प्रेरणा गीत का संगान किया। बांद्रा महिला मंडल से भारती धाकर एवं कविता चपलोत ने स्वागत व आभार प्रकट किया।

कन्याओं को प्रेरणा

स्थानीय कन्याओं को विशेष प्रेरणा देते हुए साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभाजी ने जीवन को सुखी बनाने के सूत्रों पर चर्चा की। संतुलित जीवनशैली के लिए अध्यात्म की अपेक्षा प्रकट की। साध्वी निर्वाणश्री जी ने आत्म-प्रतिलेखना की आगमिक जानकारी दी। साध्वी कंदनयशाजी, साध्वी मुदितप्रभाजी व साध्वी लावण्यप्रभाजी ने यथावसर सबको 'उत्कर्ष' हेतु प्रेरणा दी।

साध्वीश्री के त्रिदिवसीय प्रवास की सफलता में जैन भिक्षु फाउंडेशन के अध्यक्ष मदन चपलोत, मंत्री मुकेश नौलखा, तेयुप के राजेश परमार, मंत्री अशोक नौलखा, तेममं बांद्रा, ज्ञानशाला व कन्या मंडल आदि का सहयोग रहा।

नया वर्ष सबके लिए कल्याणकारी हो

कांकरोली।

मुनि संजय कुमार जी के सहयोगी संत मुनि सिद्धप्रज्ञ जी की राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ कांकरोली द्वारा प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला गुड़ी पड़वा का पर्व विशेष उद्बोधन हुआ। इस अवसर पर संघ संचालक के द्वारा मुनिश्री का संक्षिप्त परिचय दिया गया। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि साल बदल रहा है किंतु साथ नहीं बदल रहा है। नया वर्ष राजा विक्रमादित्य की याद दिलाता है और भगवान महावीर की याद दिलाता है। आज के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ० हेडगेवार का जन्म हुआ था।

मुनिश्री ने कहा कि आज के दिन की शुरुआत शक्ति, स्वास्थ्य, पवित्रता और प्रसन्नता से शुरू करना चाहिए। आचार्य महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के माध्यम से आत्मानुशसन की चेतना को जगाने का भागीरथ प्रयत्न किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में संचालकों द्वारा मुनिश्री का स्वागत करते हुए परिचय दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संघ के कार्यकर्ता एवं तेरापंथ समाज के पूर्व अध्यक्ष चंद्र प्रकाश व सुनील चोरड़िया, दिगंबर समाज के अध्यक्ष राज कुमार जैन आदि महानुभाव का विशेष सहयोग रहा।

कार्यशाला का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

टीपीएफ, साउथ कोलकाता और पूर्वांचल कोलकाता के संयुक्त प्रयास से वर्तमान समय में कॉरपोरेट वर्ल्ड की सबसे बड़ी उलझन को समझने एवं उसके समाधान के लिए एक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथी महासभा के भिक्षु ग्रंथागार में किया गया।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन टीपीएफ साउथ कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा ने किया। उन्होंने अपना स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम की शुरुआत टीपीएफ साउथ कोलकाता की फेमिना कन्वेनर कंचन सिरोहिया ने मंगलाचरण के संगान से की। इसके पश्चात टीपीएफ के निशांत बैद ने कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मोहन राय गोयनका का परिचय कराया। मोहन राय गोयनका ने वर्तमान समय में आरओसी की तरफ से आ रही कंपनियों को नोटिसेज की जानकारी एवं इस विषय की बारिकियों को समझाया।

टीपीएफ के ट्रस्टी जयचंद मालू ने कार्यक्रम की सराहना की। आभार ज्ञापन टीपीएफ पूर्वांचल कोलकाता के अध्यक्ष प्रवीण सुराणा ने किया।

इस कार्यक्रम में टीपीएफ की ट्रस्टी जयचंद मालू, कालेकाता सभा के मंत्री अजय भंसाली, टीपीएफ कोलकाता निवर्तमान अध्यक्ष कमल जैन, टीपीएफ साउथ हावड़ा के अध्यक्ष मनोज सेठिया एवं अन्य सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में कन्वेनर रोहित दुगड़ एवं निशांत बैद का योगदान रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 मई, 2022

✦ *जितना-जितना आदमी के जीवन में संयम बढ़ता है, त्याग बढ़ता है, उससे धर्म की पुष्टि होती है और जितना जीवन में असंयम बढ़ता है, उससे अधर्म की वृद्धि होती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान अलंकरण के उपलक्ष्य में

हे युगप्रधान गुरुवर

● **मुनि रश्मि कुमार** ●

हे युगप्रधान गुरुवर जी, संघ तुम्हें बधा रहा।
वर्धापना की शुभ बेला, निज भाग्य सराह रहा।।

देवो सम तेजस्वी विभूवर, नयनों में वत्सलता।
ऋजुता, मृदुता, करुणा का, सागर लहरा रहा।।

जिनशासन, भैक्षवगण का, यश फैला गणिवर का।
संवत्सरी एकता का, जन-जन गुण गा रहा।।

शासनमाता की अंतिम, इच्छा को पूर्ण किया।
युगप्रधान के पद को, मैं हूँ स्वीकार रहा।।

सरदारशहर की धरा पर, आया स्वर्णिम अवसर।
यह युगप्रधान अभिनंदन, अवसर मन भा रहा।।
षष्टिपूर्ति का दुर्लभ, अवसर मन भा रहा।
शासनमाता की ममता, है अविरल बरस रही।
महाप्रज्ञ तुलसी का, मन भी हर्षा रहा।।

तुम सा शासन पति पाकर, यह गण गुलजार हुआ।
भिक्षु के पट की महिमा, हर दिल गा रहा।।

लय : प्रभु पार्श्वदेव चरणों में---

चेतन मंदिर रोशन कर दो

● **साध्वी मंगलप्रज्ञा** ●

नेमानंदन शत-शत वन्दन प्रभो बधाते हैं।
मानसपंछी झूमके राग प्रभाती गाते हैं
कि ज्योति चरण का अभिनंदन जय-जय महाश्रमण भगवन्।
सरदारशहर की पावन भूमि गौरव गाते हैं
युगमहानायक श्रद्धा से हम शीष नमाते हैं
हे युगप्रधान अभिनंदन जय जय महाश्रमण भगवन् ।।

जन्म दिया तैजस् दिनमणि को नेमा मां के आभारी
ज्यातिर्धर आचार्यप्रवर की दीवानी दुनिया सारी
पांव-पांव चलकर महासूरज ने इतिहास रचा भारी
हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई नतमस्तक सब नर नारी
अहिंसा यात्रा रंग लाई, भारत की वसुधा मुसकाई
करुणा सागर विदेश धरा पर चरण बढ़ाते हैं
शांतिदूत घट-घट में शांति कमल विकसाते हैं।।

तुलसी-तेज बालू सुत मेधा शासन मां का आशीर्वर
मूत्तिर्मान शासनपति महाश्रमण में देखो अतिसुंदर
रहे निरामय चिन्मय मूरत, तन्मय भक्ति करे चेतन
एकलव्य सी हो गुरु भक्ति अर्जुन सा आज्ञा आराधन
जय महातपस्वी चिरायु हो, जय महायशस्वी चिरायु हो
अमियपगी दृष्टि से युग संताप मिटाते हैं
युगद्रष्टा युगस्रष्टा वो युगप्रधान कहलाते हैं।।

जागे- जागे भाग्य जगे सौभाग्यवान महाश्रमण मिले
खिले-खिले दिल कमल खिले बागवान महाश्रमण मिले
जले-जले चिद्दीप जले ज्योतिचरण महाश्रमण मिले
फले-फले जीवन सुरतरु जो सर्वशरण महाश्रमण मिले
भर दो गुरुवर शक्ति भर दो, चेतन मंदिर रोशन कर दो
झूमरसुत! हम झूम झूम यश शंख बजाते हैं
मंगल षष्टिपूर्ति जन्मोत्सव बलिहारी जाते हैं।।

लय : लाल दुपट्टा उड़ गया रे ----

युगप्रधान की महिमा गूंजे

● **मुनि अनुशासन कुमार** ●

युगप्रधान की महिमा गूंजे, देखो सकल जहान।
हर्षित प्रमुदित दसों दिशाएँ, गाएँ मंगल गान।
अनुपमेय तेरी गाथाएँ, धरती पर भगवान।।
जय-जय ज्योतिचरण, तुम्हीं तारण तरण।
है भव-भव तेरी शरण, महाश्रमण।।

पथरीली राहों में, गिरी कंदराओं में,
थामें न तुमने ये चरण।
गरजती घटाओं में, झुलसती हवाओं में,
मुख पर है समता का वरण।
स्वर्णाक्षर अंकित यात्राओं का इतिहास महान।
विस्मित हो सब शीश नमाएँ, आस्था के अस्थान।। अनुपमेय---।।

दिव्य तेरा रूप है, जिनवर स्वरूप है,
भरता नहीं ये मन कभी।
स्नेह का प्रपात है, मिले दिन-रात है,
बाधाएँ आती ना कभी।
मंगलपाठ तुम्हारा गुरुवर, ज्यों अमृत का पान।
दोनों हाथों से जी-कारा, सर्व सुखों की खान।। अनुपमेय---।।

गुरुद्वय साकार हो, नवयुग आकार हो,
तुमसे जुड़ी हर आस है।
शासना में हम बढ़ें, संघ शिखरों चढ़े,
गण को समर्पित श्वास है।
मर्यादा का रूप निराला, अनुशासन पहचान।
है आचार अनुत्तर विभुवर, जिन शासन की शान।। अनुपमेय---।।

लय : अल्लाह वारियां---

महाकीर्तिधर महाश्रमण

● **साध्वी कनकरेखा** ●

महाकीर्तिधर महाश्रमण करते चरणों में वंदन
लेकर श्रद्धा का चंदन युगप्रधान का अभिनंदन।
ज्योतिचरण को ऽऽऽ आज बधाएं रे -----।।

शिशु वय में संयम धारा मां नेमा का उजियारा
जन्मभूमि सरदारशहर मोहन-मुदित बना प्यारा।
विनय-समर्पण पहचान बनाएं रे-----।।

जिनशासन की शान हो जन-जन के भगवान हो
भैक्षवगण के मुकुटमणि संस्कृति के सम्मान हो।
करुणा के सागर ऽऽऽ करुणा बरसाएं रे---- ।।

जन्मोत्सव दिन आया है, खुशियां भर-भर लाया है
पटोत्सव दिन आया है, अन-जन मन हरसाया है।
त्रिभुवन सितारे ऽऽऽ यश घुंघरु बजाएं रे----।।

युगों तक शासना मिलती रहें यह भावना
युगप्रधान का यह उत्सव करते हैं शुभकामना।
मंगल बेला में ऽऽऽ नव दीप जलाएं रे----।।

तर्ज खुशियों के नव--

युगप्रधान गुरुदेव के चरणों में हार्दिक नमन

● **मुनि कमल कुमार** ●

भैक्षव शासन को मिले, सक्षम वर आचार्य।
सभी अचंभित देखकर, उनके अनुपम कार्य।।
श्री तुलसी महाप्रज्ञ व, महाश्रमण गण ईश।
युगप्रधान तीनों बनें, सदा नमायें शीश।।
महाश्रमण गुरुदेव को, वंदन शत-शत बार।
कदम कदम पर सुन रहे, मुख मुख जय-जयकार।।
तेरापंथ समाज को होता सात्त्विक नाज।
बड़े भाग्य से हैं मिले, महाश्रमण गण ताज।।
विघ्न विनाशक सुगुरु का, स्मरण करो दिन रात।
सघन अंधेरे में सहज, होगा स्वर्ण प्रभात।।
पाप भीरु गुरुदेव का, प्रतिपल ध्यायें ध्यान।
गुरु दृष्टि आराधकर, करें आत्म कल्याण।।
सुख इच्छुक मत भूलना, गुरुवर का उपकार।
प्राप्त करोगे सफलता, होगा आत्मोद्धार।।
सरदारशहर में है खिला, उत्सव का नव रंग।
पुण्याई गुरुदेव की, देख सभी हैं दंग।।
चारतीर्थ का सुगुरू ने, हृदय लिया है जीत।
प्रमुदित मन हम गा रहे, मिलजुल मंगलगीत।।
युगों-युगों तक आपका, पाकर आशीर्वाद।
बढ़ें साधना में सतत्, हम सारे निर्बाद।।
करुणा सागर के करुं, हृदय खोल गुणगान।
युग प्रधान गुरुदेव का, है उपकार महान।।

प्रभु को आज बधाएँ

● **साध्वी मनीषाप्रभा** ●

युगप्रधान युगपुरुष को वंदन शत बार।
तुलसी महाप्रज्ञ गुरु तुमको बधाने आए महाश्रमण दरबार
शासनमाता गुरुवर को बधाने आए महाश्रमण दरबार।

युगप्रधान शासना में चलती कल्पतरु शीतल बहारें
अष्टसिद्धियाँ नवनिधियाँ मिलकर तेरे चरण पखारे
दवदंती जयवंती देवियाँ भी प्रभु को आज बधाएँ
अवनी अंबर में भी खुशियों की नई बहार।।१।।

धर्मसंघ के कण-कण में खुशियाँ आज बेअंदाज
पंचम आरे में पुण्याई से मिले तारणतरण जहाज
गुरुवर! युगों-युगों तक चलता रहे तेरा अचक्का राज
तुम्हारे इन पावन चरणों में हमारा अद्भुत संसार।।२।।

सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा का रचा नूतन इतिहास
कीर्तिधर गुरुवर ने किया विदेश धरा चातुर्मास
'अमृत महोत्सव साध्वीप्रमुखा' का दिया संघ को मधुमास
युगप्रधान अभिषेक पा जन्ममाटी हुई गुलजार।।३।।

लय : जन्ममाटी हुई गुलजार---

आचार्यश्री महाश्रमण जी षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में

महाश्रमणोस्तु मंगलं

● **मुनि अमन कुमार** ●

षष्ठी पूर्ति मनावां मिलजुल, जन-जन हर्ष अपार,
वीतराग कल्प गुरु ध्याकर, हो जाए बेड़ा पार।।

नेमानंदन शत-शत वंदन करते हैं,
प्रवचन रसियों की झोली प्रभु भरते हैं,
मानवता के महामसीहा, की हो जय-जयकार।।

विनयशीलता, श्रमनिष्ठा, प्रभु की बेजोड़,
महातपस्वी, क्षमाशील की, हो ना होड़,
गुणग्राही, मृदुभाषी गुरुवर, करते जन उद्धार।।

इतिहास नवीन रचाया, गुरुवर ने सुखकर,
है संकल्प मेरू सम, झुक जाते हैं सर,
'शासनमाता' को दर्शन दे, किया स्वप्न साकार।।

षष्ठी पूर्ति की गुण गाथा, हम गाते हैं,
महाश्रमण की मूरत, हृदय बसाते हैं,
जुग-जुग जीवो हे गणनायक, 'संत अमन' उद्गार।।

लय : रोम-रोम में---

अणुव्रत अपसेट को सेट करता है

बैंगलोर।

स्वतंत्रता के समय भारत में फैली हिंसा व अराजकता के कारण अनुशासन, संयम व अणुव्रत के शंखनाद से लाखों-लाखों लोगों ने अपने जीवन को संवारा है। अच्छे व्यवहार से नकारात्मक को सकारात्मकता में बदला जा सकता है व हर इंसान जीवन में उच्च स्तर प्राप्त कर सकता है। अपेक्षा है अणुव्रत के नियमों को अपनाकर जीवन को स्वस्थ व सुंदर बनाना होगा। यह विचार मुनि अर्हत कुमार जी ने अणुव्रत संगोष्ठी के अंतर्गत व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हमारा खान-पान अच्छा होना चाहिए।

सहयोगी मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत के नियम अपनाकर जीवन को सुंदर बनाएँ व संत मुनि जयदेव कुमार जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम चिक्क मावली में आयोजित था जनसभा का स्वागत अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़ ने किया। सभा अध्यक्ष सुरेश चंद, अणुव्रत अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, तेयुप अध्यक्ष विनय बैद व चंद्रशेखर ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में नैनमल हेमराज प्रकाश चंद लोढ़ा, ट्रस्ट उपाध्यक्ष माणकचंद मूथा, विजयनगर महिला मंडल मंत्री सुमित्रा बरड़िया, प्रकाश चंद्र बाबेल, हस्तीमल हिरण, संगठन मंत्री निर्मलपोखरना, सहमंत्री धर्मेंद्र बरलोटा, चेतना केंद्र के मंत्री मदन बरमेचा आदि भी उपस्थित थे।

मंगलाचरण देवराज रायसोनी ने धन्यवाद अणुव्रत दक्षिण कर्नाटक प्रभारी ललित बाबेल ने दिया। संचालन मंत्री माणकचंद संचेती ने किया।

मंगल गाएँ दशों दिशाएँ

● **सध्वी निर्वाणश्री** ●

नभ धरती में गूंज रही है, महाश्रमण की यशगाथाएं ।
षष्टिपूर्ति की शुभबेला, मंगल गाएं दशो दिशाएं ।।

भाग्य और पुरूषार्थ चक्र दो संवाहक हैं जीवन रथ के।
कदम-कदम पर मिले सफलता, राह दिखाते पत्थर पथ के।
अतिशायी व्यक्तित्व तुम्हारा, शत-शत श्रद्धा शीश झुकाएं।।

अप्रमत्त साधक तुम भगवान! पल-पल का रस सींच रहे हो।
संकल्पों से संयम को भी जगरूक बन सींच रहे हो।
अभिनंदन करने गुरुवर का, भक्त हृदय ये हैं उमगाएं।।

गुरुचरणों में सौंप स्वयं को बने सदा निर्भार।
अशीर्वाद से पाए जिनके सुंदर-सुंदरतम उपहार।
मंगल अवसर जन्मधरा यह वर्धापन के गीत सुनाएं।

धर्मदूत तुम बनकर आए

● **साध्वी विधिप्रभा** ●

मानवता के दिव्य रूप हो, धर्मदूत तुम बनकर आए,
मूर्च्छित मानव संस्कृति के हित, संजीवन लेकर तुम आए।।

पौरूष के हो परम पुजारी, कदम-कदम पर मिली प्रतिष्ठा
समाधान देते जन-जन को, मानव की तुम में है निष्ठा
जगत पढ़ेगा प्रभो! तुम्हारी, लिखी प्रेम की पुण्य ऋचाएं।।
मूर्च्छित मानव संस्कृति ------ तुम आए।

लम्बी-लम्बी पदयात्रा कर, जन सम्पर्क बढ़ाया तुमनें
वत्सलता की बरसा कर, मीत स्नेह का गाया तुमनें
देख तुम्हारी दिव्य परख को, बार-बार बलिहारी जाए।।
मूर्च्छित मानव ----तुम आए।।

संघ संपदा की श्री वृद्धि, चिंतन रहता दिन-रातों में
संयम पथ की खरी कमाई, बढ़ी रहती थी खातों में
संयमपथ के तुम उद्गाता, श्रेष्ठ प्रेरणा पाते जाए
मूर्च्छित मानव ----- तुम आए।।

शिव सुंदरं जीवन तेरा, आलोकित जैसा ध्रुवतारा
संकल्पों की ज्योत जला हम करते हैं अभिषेक तुम्हारा
सांस समर्पित है चरणों में, आत्मज्योति को हम पा जाएं।
मूर्च्छित मानव----तुम लेकर आए।।

✦ *आदमी को अहिंसा, संयम और तप में पुरुषार्थ करना चाहिए। इन तीनों में सम्यक् पुरुषार्थ करने वाला आदमी मोक्ष की दिशा में गतिमान हो सकता है।*

✦ *अणुव्रत कहता है—तुम परलोक को मानो या मत मानो, आचरण को अच्छा बनाने का प्रयास करो, जीवन में नैतिकता को धारण करो, जीवन उन्नत बन सकेगा।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

जन्मोत्सव : पट्टोत्सव : षष्टीपूर्ति

जय महाश्रमण गुरुदेव

● **साध्वी गुणप्रेक्षा** ●

जन्मोत्सव आज मनाएं रे, महाश्रमण गुरुराज,
पटोत्सव आज मनाएं रे, महाश्रमण गुरुराज।
भावों का थाल सजाएं रे, महाश्रमण गुरुराज।।

नेमा के लाल दुलारे, दुगड़ कुल के उजियारे।
चरणों में शीष झुकायें रे----।

शासन के दिव्य दिवाकर, करुणा के तुम हो सागर
सपने साकार बनाएं रे----।

पौरुष की प्रखर निशानी, जीवन की अकथ कहानी।
षष्ठीपूर्ति रंग लाये रे---- ।

सबके हो नयन सितारे, चमको बनकर ध्रुवतारे।
गण-गुलशन को महाकाएं रे----।

अर्हत् वङ्मय व्याख्याता, जन-जन के तुम हो त्राता।
युगप्रधान कहलाएं रे-----।

युग-युग जीओ गणमाली, शासन है गौरवशाली।
तपोभूमि हरसाएं रे----।

तर्ज : महाप्राण गुरुदेव---

पुलक उठा है अम्बर-अवनी

● **साध्वी सुरेखा** ●

जन्म दिवस पर मैं अजन्मी भावना का गीत लाई।
पुलक उठा है अम्बर अवनी देते सौ-सौ बार बधाई।।

पता नहीं किन प्राणों ने हैं तुम्हें पुकारा।
विश्व मोहिनी मूरत की उतरी परछाई।
सूरज ने भी अगवाणी में भोर जगाई।
नई रोशनी नखतों ने अपनी बरसाई।।
प्राची ने स्वागत में तेरे मंगलमय मल्हार सुनाई।।

पूर्व दिशा में एक अपूर्व गीत सुनाया।
दक्षिण दिग् ने दक्षिणावर्त शंख बजाया।
पश्चिम ने सिंदूरी बिंदिया शीश लगाकर।
उत्तर ने उन्नत भावों का थाल सजाया।।
क्षीर समंदर ने लहरों से अमृत रस की धारा बहाई।।

गोधूलि में दीप लगे घर-घर में जलने।
ओढ़ चूंदरी संध्या लगी फूलने फलने।
मन-मंदिर में लगे गूँजने नंदी घोष।
सौम्य चाँदनी बिखरी पंथी का मन छलने।।
पंचम स्वर में कोयल ने तब मीठी-मीठी तान मिलाई।।

झूमर झूम उठे खुशियों से मोहन आया।
माँ नेमा ने ममता से आंचल फैलाया।
कितनों ने मस्ती में सोहन थाल बजाया।
आँगन में कुंकुंम रंगोली द्वारा सजाया।।
वर्धमान पर राग प्रभाती गाकर पूरी रात जगाई।।

✦ *संपूर्ण कर्मों का क्षय होने से आत्मा अपने स्वरूप में स्थित होती है, उसका नाम मोक्ष है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के आयोजन

राजसमंद, बोराज

भगवान महावीर जन्म कल्याणक तेरापंथी सभा पर्वत पाटिया द्वारा मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रभात फेरी के साथ हुई। जिसमें सभा परिवार के साथ महिला मंडल, तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

प्रभात फेरी तेरापंथ भवन पर पहुँचकर एक धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हो गई। उपासक दिनेश राठौड़ एव० प्रकाश सिंघवी का निर्देशन एवं प्रवचन हुआ।

स्वागत वक्तव्य सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया ने किया एवं सभा सहमंत्री अनिल चौधरी, महिला मंडल अध्यक्षा ललिता पारेख, तेयुप उपाध्यक्ष-द्वितीय दिलीप चावत, ज्ञान कोठारी, महासभा से नानालाल राठौड़, सुनील श्रीमाल ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला के बच्चों ने महावीर अष्टकम एवं नृत्य से अपनी प्रस्तुति दी। वर्षीतप ज्ञानचंद कोठारी एवं कंचनबेन शांतिलाल मेहता का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सभा कोषाध्यक्ष राजेंद्र बैद एवं कार्यक्रम का संचालन सभा संगठन मंत्री प्रदीप गंग ने किया।

श्रवणबेलगोला

भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के अवसर पर डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि एक नारियल की प्राप्ति के लिए १२ वर्ष की प्रतीक्षा की जाती है वैसे ही जीवन को कुंदन बनाने के लिए बहुत साधना करनी पड़ती है। भगवान महावीर ने आकार और सकार के सिद्धांत दिए।

साध्वी मयंकप्रभाजी जी ने कहा कि भगवान महावीर की प्रस्तुति शब्दों और लेखों का विषय नहीं अनुभूति का विषय है। भगवान महावीर न दिगंबर थे न श्वेतांबर वे तो चिदम्बर थे। भगवान महावीर को समझने का अर्थ है स्थूल से सूक्ष्म की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर प्रयाण।

साध्वी दक्षप्रभाजी ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्सवी मेरुप्रभाजी, साध्वी मयंकप्रभाजी, साध्वी दक्षप्रभाजी तीनों ने संवाद की प्रस्तुति दी। साध्वी मेरुप्रभाजी ने अपनी गीतिका से पूरी परिषद को भावविभोर कर दिया।

मंडिया सभा से मंत्री नरेंद्र दक ने बाहर से पधारने वाले श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत किया। कोप्पल सभा अध्यक्ष पारसमल जीरावला और होलेनसीरपुर से विमल पितलिया और मैसूर से शांतिलाल नौलखा व विक्रम पितलिया और मंडया से युवक परिषद मंत्री प्रवीण दक ने अपने विचार व्यक्त किए। चन्नरायपटणा महिला मंडल ने गीतिका द्वारा अपने भाव व्यक्त किए। मंडिया कन्या मंडल से रितु दक एवं राजेश गोखरू ने गीतिका द्वारा अपने भाव व्यक्त किए।

उधना

तेरापंथ समाज एवं वर्धमान स्थानकवासी जैन समाज के संयुक्त तत्त्वावधान में विशाल शोभा यात्रा का भी आयोजन किया गया। यह शोभा यात्रा ओलपाड के मुख्य मार्ग, मुख्य बाजार एवं जैन मंदिर होते हुए महावीर भवन में पहुँचकर विशाल धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हुई। जिसमें गुजरात सरकार के ऊर्जा एवं परिवहन मंत्री मुकेश भाई पटेल भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर उपासक अर्जुन मेड़तवाल एवं कांतिभाई मेहता ने मार्गदर्शन देते हुए भगवान महावीर के जीवन-दर्शन एवं उनके सिद्धांतों की वर्तमान में प्रासंगिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला।

गुजरात के ऊर्जा एवं परिवहन मंत्री मुकेश भाई पटेल ने अपने वक्तव्य में जैन समाज की धर्मभावना एवं अहिंसा दृष्टि की सराहना की। उन्होंने सुखमय जीवन के लिए भगवान महावीर के आदर्शों को आत्मसात करने का अनुरोध किया।

तेरापंथी सभा, ओलपाड़ के अध्यक्ष भेरूलाल दक, वर्धमान स्थानकवासी जैन समाज के अध्यक्ष राकेश बम्की, मेवाड़ ओसवाल साजनान समाज के अध्यक्ष बाबूलाल मेहता आदि कार्यकर्ताओं ने प्रासंगिक प्रस्तुति करते हुए पधारे हुए अतिथियों का सम्मान किया।

कार्यक्रम एवं शोभा यात्रा में तेरापंथ एवं वर्धमान स्थानकवासी समाज के महिला मंडल, कन्या मंडल व तेयुप के सदस्यों ने भी बड़े उत्साह से भाग लिया।

पीलीबंगा

भगवान महावीर जयंती का मुख्य कर्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। समणी आदर्शप्रज्ञा जी ने मधुर स्वर लहरी के साथ मंगलाचरण किया। समणी विपुलप्रज्ञा जी ने बताया कि हम सब भगवान महावीर को मानते हैं। हमें भगवान महावीर को मानने के साथ भगवान महावीर की भी माननी चाहिए यानी भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपनाना चाहिए और उन्हें अपने जीवन में उतारना चाहिए।

समणी संचितप्रज्ञा जी ने कहा कि हमें भगवान महावीर के बताए मार्ग पर चलना चाहिए, उनकी बताई बातों को अपनाना चाहिए। महासभा कार्यकारिणी सदस्य देवेंद्र बांठिया, जैन सभा अध्यक्ष एवं आंचलिक समिति के मंत्री मूलचंद बांठिया, महिला मंडल अध्यक्षा विनोद देवी छाजेड़, प्रेक्षावाहिनी के संवाहक ओम प्रकाश पुगलिया, पुष्पा नाहटा ने अपने भाव व्यक्त किए।

प्रीति डाकलिया, तेरापंथ कन्या मंडल, तेरापंथ महिला मंडल ने वीर प्रभु के प्रति अपनी श्रद्धा सुमधुर गीतों के द्वारा प्रस्तुत की। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष हनुमान जैन द्वारा महावीर जयंती की शुभकामनाए प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन सुशीला नाहटा ने किया।

जीन्द

तेरापंथ सभा भवन में भगवान महावीर स्वामी की २६२७वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जीन्द तेयुप के मंत्री कुणाल मित्तल ने गुरुवंदना से किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ० भीम सिंह चहल ने भगवान महावीर स्वामी के मुख्य सिद्धांत अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर स्वामी ने साढ़े बारह वर्ष के साधना काल में अपने आपको तपाया है।

इस अवसर पर डॉ० सुरेश जैन, डॉ० अनिल जैन, रमेश सिंगला, मास्टर राजकिशन जैन, नरेश जैन ने अपने विचार व्यक्त किए।

तेमम अध्यक्ष उपासिका कांता मित्तल, तेयुप के उपाध्यक्ष संदीप जैन, संरक्षक राजेश जैन ने भजन के माध्यम से अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल ने किया। मुख्य वक्ता डॉ० भीम सिंह चहल को जींद टीपीएफ के सदस्यों द्वारा साहित्य से सम्मानित किया गया।

अमराईवाड़ी

अभातेमम के निर्देशानुसार भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव एवं आचार्य भिक्षु मासिक तेरस पर प्रदत्त प्रत्याख्यान में बहनों ने अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा भाव प्रकट किए। तेरापंथी श्रावक समाज, वर्धमान स्थानकवासी श्रावक समाज का संयुक्त रूप से महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव का आयोजन सिंधी भवन में हुआ।

सिंघवी भवन से रैली प्रारंभ होकर मंगल ध्वनि, सुरेलिया, रबारी कॉलोनी, रामराज्य नगर, हरभोलेनाथ पार्क होते हुए पुनः सिंघवी भवन में पहुँची। तत्पश्चात बहनों द्वारा मंगलाचरण एवं स्थानकवासी साध्वी परमपूज्यश्री अरुणाप्रभाजी आदि का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

साध्वी अरुणप्रभाजी एवं साध्वी कीर्ति जी ने भगवान महावीर के सिद्धांतों के बारे में बताया। विभिन्न प्रकार की प्रस्तुतियों के साथ कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन विनोद चपलोत ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री की स्मृति सभा

मुंबई।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी व साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, चेंबूर में आयोजित की गई।

समारोह में साध्वी जिनरेखाजी ने साध्वीप्रमुखाश्री के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि छोटी उम्र में संन्यास ग्रहण करने वाली साध्वी कनकप्रभाजी ने शीघ्र ही अपनी योग्यता को सिद्ध कर दिया। गुरुदेव तुलसी की पारखी नजर ने संघ को युगीन साध्वीप्रमुखा प्रदान की। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि शासनमाता एक ऐसी शख्सियत थीं, जो कभी ना भुलाए जाने वाला हैं। साध्वीप्रमुखा ने स्वयं के स्वार्थ का त्याग कर संघ के प्रत्येक सदस्य की भावना को समझा, पढ़ा, देखा, सुना व उसका समाधान प्रदान किया।

इस अवसर पर अनेक साध्वियों ने उनसे जुड़े अपने घटना प्रसंगों की प्रस्तुति दी। साध्वी श्वेतप्रभाजी, साध्वी मार्दवयशाजी, साध्वी रौनकप्रभाजी ने उनसे जुड़े भावपूर्ण प्रसंगों की अभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा मुंबई अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, मुंबई अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, अभातेयुप सहमंत्री भूपेश कोठारी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष कंचन सोनी, मुंबई महिला मंडल अध्यक्ष रचना हिरण, सिरियारी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष ख्यालीलाल तातेड़, टीपीएफ अध्यक्ष तेज प्रकाश डांगी, मुंबई सभा मंत्री विजय पटवारी, पूर्व अध्यक्ष भंवरलाल कर्णावट, महिला मंडल की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुद कच्छारा, सिमल सोनी आदि ने विचार रखे।

कार्यक्रम की शुरुआत चेंबूर महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुई। आभार ज्ञापन चेंबूर सभा मंत्री रमेश धोका ने किया। इस अवसर पर राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी के संदेश का वाचन राजकुमार चपलोत ने किया।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी मार्दवश्री ने किया। साध्वी जिनरेखाजी, साध्वी संयमलता जी द्वारा रचित गीत का संगान साध्वीवृंद ने किया। इस अवसर पर समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

भगवान महावीर जन्म जयंती कार्यक्रम का आयोजन

नवी मुंबई।

प्रथम चरण में भगवान महावीर की जन्म जयंती के मांगलिक अवसर पर सकल जैन समाज एवं महावीर इंटरनेशनल के तत्त्वावधान में वर घोड़ा का आयोजन किया गया। जिसमें ज्ञानशाला के बच्चों एवं महिला मंडल द्वारा संगीत गीत जन समुदाय के साथ में नारों का उद्घोष करते हुए झाँकियाँ प्रस्तुत की गई।

द्वितीय चरण में शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी सहवर्तनी साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में नवी मुंबई स्तरीय महावीर जयंती का कार्यक्रम महेश्वरी भवन में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी पंकजश्री जी के नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने कव्वाली एवं कन्या मंडल द्वारा नाटक प्रस्तुत किया।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, महिला मंडल मंत्री अल्का मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। माझी महापौर सागर नाइक, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष विनोद बोहरा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश बाफना, मंत्री अशोक बड़ोला ने अपने विचार व्यक्त किए। सुप्रद्धि गायक विराग मधुमालती एवं गायिका रेनू कोठारी ने गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी सम्यक्त्वयशा जी ने भगवान महावीर की जीवनी पर प्रकाश डाला। ठाणे प्रथम खासदार डॉ० संजीव नाइक ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के २०२३ मुंबई चातुर्मास के दौरान मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम नवी मुंबई में करने हेतु साध्वीश्री जी के समक्ष अपनी बात रखी।

कार्यक्रम में वाशी के उपासक रतनलाल सियाल कमलेश बोहरा, अर्जुन सिंघवी, ललित बोहरा, रोशनलाल मेहता, चेतन कोठारी, विनोद बाफना, बलवंती चोरड़िया आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शारदाप्रभाजी ने किया।

✦ *जीवन में जब पाप का उदय होता है तो प्रतिकूलता प्राप्त होती है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण दिवस के आयोजन

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने दिए प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जैसे महान अवदान

सिकंदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद एवं टीपीएफ, हैदराबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में जैन सेवा संघ रामकोट में आचार्य महाप्रज्ञ जी का महाप्रयाण दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सासवी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि मैं सबसे पहले रत्नकुक्षि धारणी मणिधारी माँ बालूजी को वंदन करती हूँ जिन्होंने महाप्रज्ञजी जैसे अनमोल रत्न को जन्म दिया। कोई भी व्यक्ति महान होता है अपने व्यक्तित्व व कर्तृत्व से। मानव जाति के उत्थान के लिए उन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जैसे महान अवदान दिए हैं। आज उनकी बारहवीं पुण्यतिथि पर उनके द्वारा बताए गए उपदेशों पर चलें तभी हमारा जीवन सार्थक और सफल हो सकेगा।

साध्वी रश्मिप्रज्ञा जी ने इस अवसर पर मधुर गीतिका से पूरे परिसर में समा बांध दिया। साध्वी संपत्तिप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नवकार मंत्र एवं ॐश्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः के सामुहिक संगान से हुआ। तत्पश्चात टीपीएफ, हैदराबाद सदस्यों द्वारा मंगलाचरण किया। महिला मंडल द्वारा रोचक गीतिका प्रस्तुत की गई।

तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा एवं टीपीएफ, हैदराबाद के अध्यक्ष मोहित बैद ने सभी का स्वागत किया। मोहित बैद ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अनंत कृतज्ञता ज्ञापित की।

महिला मंडल अध्यक्षा अनीता गीड़िया, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण शमसुखा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, टीपीएफ राष्ट्रीय सहमंत्री ऋषभ दुगड़, महासभा सदस्य लक्ष्मीपत बैद, नामित सिंघी एवं सिकंदराबार मंत्री सुशील संचेती ने आयोजन के प्रति सभा एवं टीपीएफ को शुभकामनाएँ प्रेषित की। जैन सेवा संघ के महामंत्री प्रशांत कोटेचा ने महाप्रज्ञजी को भावांजलि अर्पित की। आभार ज्ञापन टीपीएफ मंत्री सुनील पगारिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया।

ज्ञान के अथाह सागर थे आचार्य महाप्रज्ञ

भुवनेश्वर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ जी का महाप्रयाण दिवस तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित हुआ।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि कुछ लोग अतीत की यादों में, कुछ लोग वर्तमान में व कुछ लोग भविष्य की कल्पना में जीते हैं। परंतु आचार्य महाप्रज्ञ तीनों कालों में सामंजस्य बिठाकर जीए। उन्होंने अतीत का अनुसंधान कर भविष्य के लिए योजनाएँ बनाते हुए वर्तमान में प्रयोग किए। वे कालजयी पुरुष थे। वे साहित्यकार, प्रवचनकार, संस्कृत, प्राकृत के आशु कवि ज्ञान के अथाह सागर थे। उन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अहिंसा समवाय आदि अवदान देकर मानव जाति को उपकृत किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उड़ीसा सरकार के गृहराज्यमंत्री दिव्य शंकर मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। अतिथि ममता जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। महासभा पंचमंडल सदस्य भंवरलाल बैद ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथी सभा, भुवनेश्वर के अध्यक्ष बच्छराज बेताला ने दिया। तेयुप के अध्यक्ष विवेक बेताला, तेमम अध्यक्ष मधु गीड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल ने सुमधुर गीत का संगान किया। सुशीला सेठिया, मुन्नी देवी बेताला ने काव्य पाठ व धारिणी सुराणा ने गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन मंत्री पारस सुराणा ने व संचालन मुनि परमानंद ने किया। अतिथियों का सम्मान सभा द्वारा किया गया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान अलंकरण के उपलक्ष्य में

झुक्यो रेवै शीष : मिलती रेवै आशीष

● साध्वी स्वर्णरेखा ●

वैशाखा री बलबलाती लूआं, आंख्या काढ़तो तावड़ो, भोझर सी तपती बालू में, धवल धोरां रै टीलां में पराक्रम और पुरूषार्थ रा किलां रोपणियां, श्रमबिन्दु ने बहा-बहा इतिहास रै सिंधु में नया-नया मोती निपजावणियां तेरापंथ रा इग्यारहवां आचारज- संत जीवन री सुभट बानगी में, सोनेसी धरती रै कण-कण नै चमका रह्या है। तेरापंथ धर्मसंघ री गुम्मैज भरी उज्ज्वल संस्कृति री ध्वजा फहरा रह्या है। पूजी महाराज री किरपा रै साथै हवा रो रूख पूजी महाराज री जन्मभूमि, दीक्षाभूमि, पदाभिषेकभूमि, युगप्रधान अलंकरण भूमि सरदारशहर में तेज गति स्यूं बहणै लाग्यो। लूआं री लपटां में शांति रो जमघट जमग्यो, बूढ़ा-बडेरा न लागै सतरंगो इन्द्रधनुष बणग्यो जवानां न लागै सपनां में रंग भरग्यो, टाबरां न लागै खुणखुणियो मिलग्यो। जीवन रै न्यारां-न्यारां पहलू में तीज-त्यौहारां रै साथै युगप्रधान रो मोटो मोच्छव मिलग्यो।

ओ उच्छब है- गण री गहरी नींवां रो, श्रम री छवि रो, करूणा री छांव रो, जागृत अन्तर्दृष्टि रो। नाथ पंथ रा गोरखनाथ जी महाराज री वाणी है- 'अंरिवयन माहि दृष्टि लुकाले, काना माहि नाद, शून्य माहि सुरता रमा ले, यो ही पद निर्वाण।

गहरो दर्शन, नाद-श्रवण, बिना आलम्बन री अन्तर्मुखता म्हारै प्रभु में साक्षात् विराजै। बिना भावां रो दर्शन कोनी, बिना प्राणां री साधना कोनी, बिना बुद्धि रा विचार कोनी, बिना ज्ञान रो चांदणों कोनी। आत्मसेवा री ठावकी बानगी है, समाज सेवा री संजीवनी है, नर सेवा री तो लागै जानकी हैं। जानकी तो केवल राम सेवा में ही जीवण खपायो पण करूणा रा सिरमौर हर भक्तां री पीड़ा न सुनकर समझकर सहानुभूति स्यूं प्रतिकूल मौसम री मार झेलकर बिनै पूरी करणै वास्तै, न चालण रो आन्तरो देखै, न शरीर री सुख-सुविधावां री लीक खींचै, न कष्टां री परवाह करै। अन्तः स्थल री संवेदना स्यूं भक्तां री भावना नै पूरी करै, ओ ही साचो सांवरों हैं, जठै सांवरै री सरजी सृष्टि में अभेद है भेद तो मिनख रो बजायोड़ो है। कितां जूझते जीवन नै आपरी ओज भरी, मीठास भरी वाणी स्यूं स्नान करार मृदुता रै शिखर चढ़ एकलापन री ऊबाऊ खाट में उबासी लेवणिया नै साहस रो सहारो देर झट स्यूं उठा लिया, मारग-मारग बहता बटाऊं नै परोपकार रो पाणी पियार तिरपत कर दिया, आपदा री लचक स्यूं मोच झेलणियां माथै ने आछी सोच देर मॉर्डनाइज कर दिया।

आचार्य महाश्रमण भगवान री प्रतिमा आकृति में ही आच्छी कोनी, आदर्श री प्रतिष्ठा स्यूं जगमगा रही है, कीरती तो करतार रै कदम पर कदम मेल रही है, दिव्य प्रकृति री मूरत सबनै सरसा रही हैं। सरलता और सादगी रै साम्प्रत रूप नै-न राहू ग्रसित कर सकै, न केतु विषाक्त कर सकै। ऊर्जावान री ऊर्जा स्यूं आपरी प्रकृति न ही बदल देवे। म्हारो तो ओ ही संसार है, श्रद्धा रो कंठ हार है, घट-घट रो पहरेदार हैं और संसार स्यूं कीप डिसटेंस रो बोर्ड लगाणियों शिल्पकार हैं।

हे शिल्पकार! म्हारी अलसोड़ी आंख्या नै इस्यै अंजन स्यूं आंज दिया जकां स्यूं म्है आपरा साक्षात! दर्शन कर भव-भवरा करम काट सकां और सगलां ओच्छव-मोच्छव नै अठै बैठ्या ही साक्षात् निहार सकां हे ईश! झूक्यो रेवै शीष : मिलती रेवै आशीष।

आओ महावीर के आदर्शों पर चलें

हैदराबाद।

साध्वी त्रिशलाकुमारी जी के सान्निध्य में महावीर जन्म कल्याणक कार्यक्रम निजाम कॉलेज ग्राउंड में जैन सेवा संघ की महिलाओं के मंगलाचरण से हुआ। हैदराबाद महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगानि किया। कार्यक्रम में सभी संप्रदाय के साधु-संत एवं साध्वीवृंद उपस्थित थे। श्री जैन सेवा संघ द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने वर्चुअल ऑनलाइन उपस्थित होकर कार्यक्रम की बधाई दी।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि भगवान महावीर के संदेश तब भी अनुकरणीय थे और अब भी उनकी उतनी ही जरूरत है। उन्होंने कहा कि महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत और आदर्शों का हमारे जीवन में अवतरण होगा तभी जन्म कल्याणक मनाने की सार्थकता हो सकेगी। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा कार्यक्रम के संयोजक के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में सभा, महिला मंडल, तेयुप के सदस्यों के साथ रैली के रूप में साध्वीश्री कार्यक्रम स्थल तक पहुँचे।

साध्वीश्रीजी का रात्रिकालीन कार्यक्रम दुलीचंद नाहटा के निवास स्थान पर भक्ति संध्या का रखा गया। नितिन और विपिन ने अपने परिवार और टीम के साथ सुंदर भजनों की प्रस्तुति दी। संगायक महेंद्र डागा पर संतोष ने अपने गीतों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

मंगल प्रवेश

चित्तौड़गढ़।

शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी एवं मुनि अतुल कुमार जी का तेरापंथ भवन राशमी (चित्तौड़गढ़) में मंगल प्रवेश हुआ। जहाँ पर मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि पारिवारिक झगड़ों में क्रोध की अहम भूमिका है और क्रोध की पृष्ठभूमि में रहता है अहंकार। जितना प्रबल अहंकार उतना प्रबल आवेश। लोभ भी पारिवारिक कलह का मुख्य कारण बनता है।

व्यक्ति को क्रोध और आवेश पर नियंत्रण रखते हुए सुखमय, शांतिमय पारिवारिक जीवन जीना चाहिए। इस अवसर पर नेमीचंद बाफना, निर्मल सिंघवी, प्रवीण पोखरना, प्रकाश खाब्या, अशोक खाब्या, अशोक बुरड़ सहित अनेक सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

बालोतरा।

न्यू तेरापंथ भवन, बालोतरा में साधना बांठिया का पारमार्थिक शिक्षण संस्थान में मंगल प्रवेश हेतु मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल ने कहा कि आज के युग में दीक्षा के भाव आना बहुत बड़ी बात है। साधना ने कठिन राह का चयन किया है, परंतु ये फूलों सा मार्ग सिद्ध होगा और आत्मा का कल्याण होगा। महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा ने कहा कि संयम का मार्ग ही हमें मोक्ष की ओर ले जाएगा।

बहन साधना बांठिया ने परिवार जनों के प्रति विशेष आभार ज्ञापित किया। सभी परिवार जन और समाज के प्रति क्षमायाचना की और शीघ्र ही मुमुक्षु से दीक्षार्थी बनने की भावना व्यक्त की।

तेयुप स्वर संगम और महिला मंडल ने गीतों के माध्यम से अपने भाव प्रकट किए। इस अवसर पर मुमुक्षु दीप्ति बाई, अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, ज्ञानशाला संयोजक राजेश बाफना, अभातेमम सदस्या सारिका बागरेचा, कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वेदमूथा, ममता बांठिया, बाबूलाल बांठिया, सारवी सालेचा, मीनाक्षी बांठिया, डिम्पल सालेचा और सोहन छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा मंत्री महेंद्र वेद ने किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 मई, 2022

✦ *जीवन में समता भाव प्रस्फुटित हो जाता है तो मानना चाहिए कि व्यक्ति के जीवन में धर्म अवतरित हो गया।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

युवा बने जीवन रक्षक

टी-दासरहल्ली।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, टी-दासरहल्ली द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स का फिजिकल मिशन एंपावरमेंट का तीसरा कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

एनडीआरएफ द्वारा प्रशिक्षित तेरापंथ टास्क फोर्स के कैडेट्स द्वारा विभिन्न विद्यालय, कॉलेज और सामाजिक संस्थाओं में मिशन एम्पावरमेंट का कार्यक्रम किया जा रहा है। मिशन एम्पावरमेंट के इस कार्यक्रम में लगभग ५० व्यक्तियों को मेडिकल आपदा से निपटने के गुर सिखाए गए।

तेरापंथ टास्क फोर्स के एक वीडियो के माध्यम से तेरापंथ टास्क फोर्स की वर्तमान समय में उपयोगिता और विभिन्न आपदाओं जैसे कि केरल बाढ़, कोरोना काल एवं अन्य प्राकृतिक आपदा विपदा की परिस्थिति में की गई सेवाओं के बारे में विवरण दिया गया। तेयुप के अध्यक्ष कुशल बाबेल ने सभी का स्वागत किया।

तेरापंथ टास्क फोर्स कैडेट जय चोरड़िया ने ट्रेनिंग दी। कार्यक्रम का संचालन राकेश दक ने किया। तेरापंथ ट्रस्ट उपाध्यक्ष लोकेश बोहरा, श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। ट्रस्ट मंत्री कन्यालाल गांधी, अभातेयुप किशोर मंडल प्रभारी विशाल पितलिया, महिला मंडल मंत्री गीता बाबेल, तेयुप उपाध्यक्ष कमलेश चावत, सहमंत्री प्रवीण बोहरा, विनोद बोहरा, संयोजक पंकज बाबेल, टीटीएफ साउथ जोन प्रभारी गौतम खाब्या, किशोर मंडल संयोजक सुजल बोहरा एवं सह-संयोजक शुभम बाबेल, कन्या मंडल संयोजिका खुशी मेहर, तेयुप कार्यसमिति सदस्य उपस्थित रहे।

विशाल नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर

केलवा।

भिक्षु नगर केलवा एवं गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में एक विशाल नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन भिक्षु विहार में किया गया।

तेयुप के अध्यक्ष मुकेश कोठारी ने बताया कि अभातेयुप के त्रिआयामी उद्देश्य सेवा, संस्कार एवं संगठन के तहत स्थानीय तेयुप द्वारा विशाल नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। राजसमंद विधायक दीप्ति किरण माहेश्वरी एवं अंतर्राष्ट्रीय तैराक जगदीश तेली द्वारा जैन ध्वजारोहण कर एवं फीता खोलकर शिविर आरंभ किया गया। शिविर में गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल उदयपुर के अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त डॉक्टरों द्वारा रोगियों का इलाज किया गया।

शिविर में ३०६ रोगियों की जाँच एवं परामर्श किया गया। विधायक दीप्ति माहेश्वरी एवं अंतर्राष्ट्रीय तैराक जगदीश तेली का स्थानीय तेयुप द्वारा सभी पधारे हुए डॉक्टर्स एवं स्टॉफ का अपर्णा और वृंदावनी पहनाकर स्वागत किया गया। शिविर के पश्चात तेयुप मंत्री सुमित सांखला द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

शिविर के अर्थ सहयोगी जीतमल, रमेश चंद्र बोहरा परिवार थे। शिविर में तेरापंथ सभा, तेयुप, तेममं, तेरापंथ किशोर मंडल, गीतांजलि मेडिकल डॉक्टर्स, स्टॉफ एवं कई गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेयुप द्वारा भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस एवं महामना भिक्षु के सुदी तेरस के उपलक्ष्य पर भजन संध्या का आयोजन प्रबुद्ध विचारक अशोक कोठारी के निवास स्थान पर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा ने नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया एवं सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

उपाध्यक्ष मनीष बैद, उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, सहमंत्री अमित बेगवानी, सहमत्री राहुल दुगड़, कोषाध्यक्ष विजय राज पगारिया, भिक्षु धम्म जागरण के संयोजक हर्ष बांठिया, सह-संयोजक रोहित बैद, अमित चोरड़िया सहित अनेक जनों ने भजनों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन पर्यवेक्षक अमित बेगवानी ने किया। परिवार से अशोक कोठारी ने सभी का आभार व्यक्त किया। उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन सह-संयोजक रोहित बैद ने किया।

भगवान महावीर जयंती समारोह

अररिया कोर्ट।

महावीर जयंती के अवसर पर तेरापंथी सभा के द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन से प्रातः रैली का आयोजन किया गया। तत्पश्चात भवन में कार्यक्रम रखा गया, जिसका शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण के साथ किया गया।

सभा अध्यक्ष अजय बैद, तेयुप अध्यक्ष नितिन दुगड़, मंत्री सुनील हीरावत, महिला मंडल मंत्री माला छाजेड़, यश छाजेड़, कल्पना देवी चिंडालिया, कांता देवी बेगवानी, मनोज बरड़िया सभी के द्वारा अपने भाव एवं गीतिका प्रस्तुत की गई।

समीक्षा दुगड़ के द्वारा बनाए गए चित्रों का प्रदर्शन किया गया। जैन विद्या में उत्तीर्ण हुए छात्रों को प्रमाण पत्र दिया गया। भंवरलाल बेगवानी को अणुव्रत समिति का अध्यक्ष बनने की घोषणा की गई। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप चोरड़िया के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में सभा मंत्री राजू दुधेड़िया, अरविंद नाहटा, महेंद्र भूरा, राजीव छाजेड़ सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

लोभ है पाप का बाप : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, २८ अप्रैल, २०२२

साधना के शलाका पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन वाङ्मय में कषाय शब्द आता है। कषाय वह तत्त्व है जिसके द्वारा कर्म-मल का ग्रहण होता है। क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाय हैं।

जैन दर्शन में आठ कर्म हैं, चार घाति कर्म हैं, चार अघाति कर्म हैं। वेदनीय, नाम, गौत्र और आयुष्य ये चार अघाति कर्म हैं। ये चार कर्म भले हैं, आत्मा का विशेष नुकसान करने वाले नहीं हैं। जैसे जानवरों में खरगोश सरल होता है, वैसे ये भी भले हैं, इनसे ज्यादा खतरा नहीं है। खतरा होता भी है, तो शरीर को है, आत्मा को नहीं। अघाति कर्म यदि पुण्य रूप में हैं, तो खतरा ही नहीं है। अनुकूलता रहेगी।

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय—ये चार घाति कर्म हैं। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अंतराय कर्म को पैदा करने वाला मोहनीय कर्म है। मोहनीय कर्म नहीं है, तो शेष तीन का बंध नहीं हो सकता। इन चारों कर्मों में मुख्य मोहनीय कर्म है।

साधना के क्षेत्र में निशाना साधना हो तो मुख्यतया मोहनीय कर्म को निशाना बनाना चाहिए। मोहनीय कर्म का प्रभाव कैसे कम पड़े, उस पर मैं ध्यान देकर प्रयास करूँ। अध्यात्म के क्षेत्र में मोहनीय कर्म साधना में बाधक है। इसका नाश करने का हमें विशेष प्रयास करना चाहिए। मोहनीय कर्म की अट्ठाइस प्रकृतियाँ हैं।

मोहनीय कर्म का बहुत बड़ा परिवार है, २८ सदस्य हैं। इन २८ में संज्वलन का जो लोभ है, वो दसवें गुणस्थान तक रहता है। ग्यारहवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म उपशांत रूप में हो। ग्यारहवाँ गुणस्थान वीतराग का है, पर उसकी स्थिति बहुत कम है। बारहवें गुणस्थान वाला वीतराग स्थायी वीतराग का है। परमानेंट हो जाए उसका महत्त्व है।

लोभ कषाय अंत में जाने वाला कषाय है। लोभ ऐसा तत्त्व है, जिसके कारण से आदमी झूठ भी बोल देता है और हिंसा में भी जा सकता है। अशुभ योग छठे गुणस्थान तक हो सकता है। सातवें गुणस्थान से अशुभ योग नहीं हो सकता। छद्मस्थता का प्रकोप छठे गुणस्थान तक ही है। सातवें से बारहवें तक छद्मस्थता तो है, पर उसमें निस्तेजता है।

लोभ है, वो साधु को भी उत्पथ की ओर ले जा सकता है और कषाय भी ले जा सकते हैं, पर लोभ ज्यादा बलवान कषाय है। पाप का बाप लोभ है। तात्त्विक दृष्टि से देखें तो लोभ एक जटिल तत्त्व है। तो फिर करें क्या? उस पर कैसे कंट्रोल करें?

गृहस्थ आप लोग है, परिग्रह की सीमा, इच्छाओं का अल्पीकरण करने का प्रयास रखें। उम्र आ जाए तो विशेष ध्यान देना चाहिए कि परिग्रह मेरा कैसे कम हो? व्यवसाय-व्यवहार में भी प्रामाणिकता रहे। पाप के बंध से बचने का प्रयास करें। इससे लोभ की कषाय पर कंट्रोल करने का प्रयास हो सकता है। अनैतिकता-झूठ से बचें।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने एक बार दो शब्द फरमाए थे—अर्थ और अर्थाभास। न्याय से उपार्जित धन अर्थ होता है। अन्याय-अनीति से जो पैसा अर्जित किया जाए वो अर्थाभास है। गृहस्थ ध्यान दे कि मेरे घर में अर्थाभास न रहे। थोड़ा संयम रखे। ईमानदारी-प्रामाणिकता, सच्चाई हमारे पास है, वो शुद्धता है, वो हमारे साथ जा सकेगी।

थोड़ा संकल्प हो तो काफी बचाव या पूरा बचाव हो सकता है। गृहस्थ जीवन में अणुव्रत को रखें। लोभ कषाय को कंट्रोल में रखें। ये उसके उपाय हैं।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ प्राणवान धर्मसंघ है। प्राणवत्ता का आधार है, एक नेतृत्व। एक नेतृत्व की छत्रछाया में धर्मसंघ शांति का अनुभव कर सकता है। यहाँ गुरु आज्ञा सर्वोपरि हो जो आचार्य की दृष्टि व इंगित की आराधना करता है, वह शिष्य सफल हो जाता है। सरदारशहरवासियों का सौभाग्य रहा है कि इन्हें आचार्यों का अनुग्रह प्राप्त हो जाता है।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि हमें अपने जीवन में गुरु की जरूरत है, जो सम्यक् रूप से शिष्य का कल्याण करते हों। सम्यक् जीवन के लिए आध्यात्मिक गुरु की आवश्यकता होती है, जो हमें प्राप्त हैं। अनंत जन्मों की पुण्याई से ऐसे गुरु प्राप्त होते हैं। आचार्यप्रवर ने बारह वर्षों के शासन में कितने-कितने अवदान धर्मसंघ को दिए हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी सुमतिप्रभाजी ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। सरदारशहर की साध्वियों एवं समणियों के द्वारा समुह गीत की प्रस्तुति हुई। समणी सौम्यप्रज्ञा जी एवं समणी मंजुप्रज्ञाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत की प्रस्तुति दी। प्रवास व्यवस्था समिति उपाध्यक्ष अशोक नाहटा, महामंत्री सूरज बरड़िया ने अपनी भावना श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि दिनचर्या आदमी की बदल जाती है, तो उसकी जीवनचर्या भी बदल सकती है।

प्रवचन से पूर्व पूज्यप्रवर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा नवनिर्मित भवन में पधारे। भवन का अवलोकन कर मंगलपाठ सुनवाया। सुमतिवंद गोठी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि सरदारशहर को सेवा केंद्र के रूप में स्थापित कर अनुग्रह करवाए। महिला मंडल उस सेवा केंद्र की जगह व्यवस्था जागरूकता से कर सकती है।

गुस्सा विकास में बाधक बन सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, २६ अप्रैल, २०२२

चतुर्दशी हाजरी का दिन। मर्यादाओं का वाचन। मर्यादा पुरुषोत्तम तेरापंथ के राम आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे भीतर वृत्तियाँ विद्यमान हैं। दुर्वृत्तियाँ भी हैं और सद्-वृत्तियाँ भी होती हैं। दुर्वृत्तियों में गुस्सा एक है, जिसके कारण आदमी दुःख पाता है, अपना अहित कर लेता है। गुस्सा मनुष्यों का शत्रु होता है।

आलस्य एक ऐसा तत्त्व है, जो महाशत्रु होता है। गुस्सा भी एक शत्रु है, जो बाहर प्रकट होता है और आदमी का नुकसान भी कर देता है। शरीर पर भी गुस्से से दुष्प्रभाव पड़ सकता है। गुस्सा विकास में बाधा बन सकता है। संत वह होता है, जो शांत होता है। साधु को गुस्सा नहीं करना चाहिए। क्षमा भाव रखना चाहिए। यह पूज्य मघवागणी के सरदारशहर के जीवन प्रसंग से समझाया कि गाली देने से गुमड़े नहीं होते हैं।

समता हमारा धर्म है। साधु समुह में रहते हुए भी शांत रहें। कम खाओ स्वस्थ रहो। गम खाओ, मस्त रहो। नम जाओ, प्रशस्त रहो। थोड़े जीवन काल में भी आदमी बड़ा काम करने वाला बन सकता है। स्थितियों में आदमी धैर्य रखे, शांति न खोए। हिम्मत भी हो, साहस भी हो और भीतर में शांति भी हो।

हमारी साधना बढ़े कि झटपट गुस्से में नहीं आना चाहिए। कहने की बात कही जा सकती है, पर गुस्से में कहना जरूरी नहीं। अकबर-बीरबल के प्रसंग से यह समझाया कि शांति से कही बात आदमी स्वीकार भी करता है। प्रेम से जो काम करा सकते हो, उसके लिए गुस्सा क्यों करें।

साधु हो या गृहस्थ गुस्सा किसी के काम का नहीं है। परिवार में भी शांति रखें। मुँह में सुगर फैक्ट्री व दिमाग में आइस फैक्ट्री रखो। मिठास और दिमाग ठंडा रहे। हम कषाय विजय की साधना का प्रयास यथोचित करते रहें, यह कामना है।

आज चतुर्दशी है। पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन किया। तेरापंथ के सिद्धांत-मर्यादाएँ समझाई। साधु-साध्वियों ने खड़े होकर लेखपत्र का वाचन किया। नवदीक्षित साध्वियों ने भी लेख-पत्र का वाचन किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें तीन-तीन कल्याणक बख्शीश करवाए।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि संसारी आत्मा को सीधा परमात्मा नहीं बनाया जा सकता। स्वयं को श्रम-पुरुषार्थ, कर्तृत्व करना होगा। संसारी आत्मा जब शुद्ध स्वरूप में आ जाती है, तब आत्मा परमात्मा बन जाती है। संसारी आत्मा बंद कमरे के समान है और परमात्मा खुला आसमान है। सद्गुरु की शरण मिले तो आत्मा परमात्मा बन सकती है। हमें ऐसे सुगुरु प्राप्त हैं। कर्म का शोधन करने के लिए स्वाध्याय करें, ध्यान करें। षट् जीव निकाय के त्राता बनें। भावों को शुद्ध-सकारात्मकता रखें और तप करें। इससे हमारी बंध आत्मा के दरवाजे खुल सकते हैं।

मुनि शुभंकर जी ने अपनी भावना श्रीचरणों में अर्पित की। सुमतिचंद गोठी ने अपनी बात रखी। शाहरूख खान, मुमुक्षु निशा डागा, दक्ष नखत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हम समय का सदुपयोग करें।

महाप्रज्ञ शब्द आर्षवाणी से प्राप्त किया...

(पृष्ठ २० का शेष)

हमारे अनेक चारित्रात्माएँ भी आगम संपादन में वर्तमान में लगे हुए हैं। सारे आगम कार्य को राष्ट्र माने तो वो राष्ट्रपति गुरुदेव तुलसी थे। प्रधानमंत्री आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी थे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का ज्ञान बड़ा निर्मल था। उनमें संस्कृत-प्राकृत का अच्छा ज्ञान था। मुख्य नियोजिका जी आदि कई साध्वियाँ एवं कई मुनि भी आगम के कार्य में लगे हैं, संस्कृत का ज्ञान है, तो काम अच्छा हो सकता है।

मुनि महेंद्र कुमार जी जो भगवती का कार्य कर रहे हैं, इस कार्य को प्राथमिकता देते रहें। पनावणा के कार्य को मुख्य नियोजिका जी कर रहे हैं, वो भी जल्दी सामने आ जाए। ३२ आगम का कार्य हो जाए तो एक कार्य तो संपन्न हो जाए। ये आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी को सच्ची श्रद्धांजलि हो जाएगी।

हम समाधि स्थल पर आए हुए हैं। उनके गुण हमारे में आ जाएँ तो महाप्रयाण दिवस मनाना सार्थक हो सकता है। मुख्य मुनि, साध्वीवर्या, मुनि विमल कुमार जी, मुनि जितेंद्र कुमार जी व मुनि मनन कुमार जी भी आगम कार्य में लगे हुए हैं।

पूज्यप्रवर ने आचार्यश्री के प्रति एक स्वरचित गीत का सुमधुर संगान किया—महाप्रज्ञ गुरु वत्सलता को स्मृति में लाएँ हम।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तक My Spritual Journey जो यात्रा एक अकिंचन का अंग्रेजी अनुवाद है, पूज्यप्रवर के चरणों में लोकार्पित किया गया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

शासनसेवी श्रावक जतनमल सेठिया की जीवनी पर लिखित कृति भी उनके परिवार द्वारा श्रीचरणों में लोकार्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी बचपन में साधारण थे पर वे असाधारण बन गए थे। कालूगणी ने उस बच्चे को देखा, निहारा और अपने चरण में स्वीकार कर लिया। मुनि तुलसी को उन्हें संभला दिया। मुनि तुलसी की पाठशाला में उन्होंने बहुत कुछ सीखा। उनकी तर्क शक्ति बढ़ गई थी। वे बाहर से नहीं, भीतर से भी बदल गए थे।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी प्रज्ञा के धनी थे, वे प्रज्ञा-पुरुष थे। वे अज्ञ से विज्ञ और महाप्रज्ञ बन गए। उनकी प्रज्ञा के विकास में बाहरी निमित्त के अलावा निमित्त बने दो-दो गुरु। गुरु का योग शिष्य के जीवन में बहुत बड़ा काम कर जाता है। वे महायोगी व कुशल आगम संपादक थे। उन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जैसे अवदान दिए जो जन-जन के लिए उपयोगी हैं।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी सिद्ध योगी और बहुश्रुत आचार्य थे। उनका व्यक्तित्व विशेष था। उन्होंने जैन धर्म को नई पहचान दी। वे महान दर्शनिक होते हुए उनका जीवन सहजता लिए हुए था। वे निरंतर साधनारत रहते हुए भी परोपकार परायण थे। मैंने उनको माँ, शिक्षक, पिता और चिकित्सक के रूप में देखा है और महसूस भी किया है। वे ममता और प्रज्ञा के समंदर थे।

आचार्य महाप्रज्ञजी को अपनी भावांजलि प्रदान करते हुए मुनि रजनीश कुमार जी, मुनि राजकुमार जी, मुनि अनेकांतकुमार जी, साध्वी संगीतप्रभा जी, साध्वी अक्षयप्रभाजी, साध्वीवृंद समूह गीत, सरदारशहर की साध्वियाँ समुह गीत, साध्वी मुदितयशाजी, साध्वी चारित्रयशाजी, साध्वी पवित्रयशाजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। समणी निर्मलप्रज्ञा जी, समणी रोहिणीप्रज्ञाजी व समणी प्रणवयशा जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया, चैनरूप चिंडालिया, विनोद बैद, सुरेंद्र बोरड़, संपतमल बच्छावत, कन्या मंडल, महिला मंडल, अशोक पींचा व टमकोर के आचार्य महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की ओर से आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को भावांजलि अर्पित की गई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। रात्रि में समाधि स्थल पर धम्म जागरणा का आयोजन किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 मई, 2022

✦ *किसी भी जाति, वर्ग, संप्रदाय का व्यक्ति हो, यहाँ तक कि नास्तिक भी क्यों न हो, अणुव्रत का द्वार सबके लिए खुला है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का तेरहवाँ महाप्रयाण दिवस

महाप्रज्ञ शब्द आर्षवाणी से प्राप्त किया जाने वाला शब्द है : आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म का शांतिपीठ,
२६ अप्रैल, २०२२

वैशाख कृष्णा एकादशी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की तेरहवीं महाप्रयाण तिथि। आज से बारह वर्ष पूर्व गोठीजी की हवेली में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का महाप्रयाण हुआ था। अध्यात्म का शांतिपीठ परिसर में आपश्री का दाह-संस्कार हुआ था।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के अनंतर पट्टधर तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रथम बार अपने गुरु आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की वार्षिक महाप्रयाण तिथि पर पधारे हैं। वैसे दिसंबर, २०१३ में भी पधारे थे। पूज्यप्रवर समाधि स्थल पर पधारे एवं नीचे बैठकर अपने गुरु का स्मरण जप किया।

शासन शेखर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम वाङ्मय में महाप्रज्ञ शब्द का प्राकृत रूप प्राप्त होता है। गुरुदेव तुलसी ने मुनि नथमलजी स्वामी टमकोर को महाप्रज्ञ का अलंकरण प्रदान कर उनको अलंकृत किया था। महाप्रज्ञ शब्द आर्षवाणी से प्राप्त किया जाने वाला शब्द है।

महाप्रज्ञ अलंकरण था तो नामकरण भी हो गया। जब मुनि नथमलजी स्वामी टमकोर को युवाचार्य पद राजलदेसर में वि०सं० २०३५ माघ शुक्ला सप्तमी को दिया गया था तब आचार्यश्री तुलसी ने महाप्रज्ञ अलंकरण को नथमल की जगह नामकरण महाप्रज्ञ कर दिया था।

महाप्रज्ञ अलंकरण दिया गया वो पहचान का ही साधन नहीं, मानो यथा नाम तथा गुण वाली बात भी थी। उनमें महान प्रज्ञा या महान ज्ञान विद्यमान भी था। आज का यह दिन आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का महाप्रयाण दिवस है। उनका लगभग ९० वर्षों का जीवन काल था। टमकोर जैसे गाँव में वे शिशु रूप में भी थे। बड़े लोग छोटे-छोटे गाँवों में भी हो सकते हैं। पता नहीं गाँवों में कौन सा रत्न कब सामने आ जाए।

नथमलजी पूज्य कालूगणी के द्वारा दीक्षित हुए थे। दीक्षा प्राप्ति उनकी सरदारशहर में हुई थी। बाद में ज्ञान का विकास शुरू हुआ और वे महाप्रज्ञ बन गए। मुनि अवस्था में भी उनका विद्वान संत के रूप में नाम आता था।

मुनि नथमलजी विद्वान होने के साथ-साथ एक दार्शनिक के रूप में सामने आए। वे हमारे धर्मसंघ के स्तंभ जैसे बन गए थे। आचार्य तुलसी के हर कार्य में वे सहयोगी रहा करते थे। मुनि अवस्था में उनको एक बड़ा स्थान दिया गया—निकाय सचिव का। बाद में उनको युवाचार्य बना दिया गया। लगभग १५ वर्ष तक वे युवाचार्य के रूप में गुरुदेव तुलसी के सहयोगी रहे। अध्यापन का कार्य भी उन्होंने शुरू किया।

मुझे भी उनकी क्लास में बैठने का मौका मिला था। कितने-कितने ग्रंथों का वाचन चलता था। एक उपाध्याय का रूप उनमें उभरता था। आगम संपादन का भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य उनके द्वारा हुआ। हमारा आगम साहित्य बहुत अच्छा है। और भी अच्छा बन जाए। परिस्कार की भी अपेक्षा है।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

यादें... शासनमाता की - (६)

● साध्वी स्वस्तिक प्रभा ●

आचार्यप्रवर : कल रात की भी आलोयणा दे दें---२ घंटा जप—स्वाध्याय। दवाई के बारे में अनेक विचार आ जाते हैं। आयुर्वेदिक दें तो इनके ऐलोपैथिक चल रही है। आपका मन हो तो आयुर्वेदिक का सोचें। सरदारशहर से कनकमलजी को याद कर लें?

साध्वीप्रमुखाश्री जी : ना

करीब ४:१० बजे आचार्यप्रवर पास वाले कमरे में विराज गए।

सायं ५:३० पर फिर पधारे।

आचार्यप्रवर : मुखवस्त्रिका नहीं लगी हुई है, इसलिए कपड़ा लगा (मुँह पर) रखा है?

साध्वी सुमतिप्रभा : तहत् आचार्यप्रवर नहीं होते तब कभी हटा भी देते हैं।

आचार्यप्रवर : आपके साता रहे तो कपड़ा हटा दो।

साध्वियाँ : लोगों को दर्शन देते समय भी कपड़ा लगाकर रखते हैं।

आचार्यप्रवर : मोरपिच्छी पास में आ गई?

साध्वी सुमतिप्रभा : तहत्।

आचार्यप्रवर : आपको पोढ़ाने में साता मिले तो पोढ़ा (लेट) जाएँ। कितनी देर विराज पाते हैं?

साध्वी सुमतिप्रभा : लगभग आधा घंटा।

आचार्यप्रवर : हम बैठे हैं—ऐसा सोचकर आपको बैठने का श्रम करने की जरूरत नहीं है।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी : गुरुदेव इतनी कृपा करवा रहे हैं कि मैं बोल नहीं सकती।

आचार्यप्रवर : रात में भी सोए-सोए रहना होता है।

साध्वी सुमतिप्रभा : थोड़ी करवट लेते हैं।

आचार्यप्रवर : मेरे जाने के बाद फिर पोढ़ा जाएँगे।

साध्वी सुमतिप्रभा : सुबह-सुबह गुरु वंदना वाले टाइम कुछ देर विराजते हैं।

आचार्यप्रवर : यानी ज्यादा सुविधा सोने में रहती है। तब तो हम ज्यादा नहीं बैठें।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी : गुरुदेव की मर्जी हो उतनी सेवा करवाएँ।

आचार्यप्रवर : आप भले पोढ़ाओ। सेवा तो आप फरमाओ तो दिन में भले ८-१० घंटा बैठ जाएँ।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी : इतना नहीं गुरुदेव। धर्मरुचिजी स्वामी बाहर खड़े हैं। गुरुदेव की मर्जी हो इतिहास वाले कार्य की जिम्मेदारी उन्हें दे देवें।

इस संदर्भ में आचार्यप्रवर ने जो लिखित करवाया, उसे प्रस्तुत किया जा रहा है—

अभी सायंकाल लगभग ५:४५ के आसपास हम साध्वीप्रमुखाश्री जी के पास उनके कमरे में बैठे हैं। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के जीवनवृत्त (तेरापंथ के इतिहास का एक अंग) का कार्य मेरे द्वारा साध्वीप्रमुखाश्रीजी को सौंपा हुआ है। इस विषय में साध्वीप्रमुखाश्रीजी की अभिव्यक्ति संभवतः ऐसी हुई है कि उस कार्य की संपूर्ति में मुनिश्री धर्मरुचिजी स्वामी तथा साध्वी चित्रलेखाजी व साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी योगदान दे। अपेक्षा पड़े तो शासन गौरव साध्वी कल्पलताजी का सहयोग भी लिया जा सकता है। परंतु मूलतः दो नाम साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने फरमाया—ऐसा मैं समझा हूँ और मेरी बात यह है कि साध्वीप्रमुखाश्रीजी स्वस्थ होकर स्वयं ये कार्य संपन्न करें—यह मंगलकामना है। साध्वीप्रमुखाश्रीजी की भावना मैंने नोट कर ही ली है। मेरी मंगलकामना भी सामने नोटेड है। मुनि धर्मरुचिजी स्वामी भी यहीं विराजित हैं। साध्वी चित्रलेखा, साध्वी स्वस्तिकप्रभा, साध्वी कल्पलताजी भी यहीं खड़ी हैं। इसलिए सभी सम्बद्ध व्यक्तियों के सामने ही यह बात हो रही है।

खासकर ये दो साध्वियाँ मुनि धर्मरुचि जी स्वामी से गाइडेंस अपेक्षानुसार लेकर कार्य करें और फिर निरीक्षण के लिए उन्हें दे दें। ये विधा रहनी चाहिए। मेरी इस बात में साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने संकेत के द्वारा सहमति प्रदान की है और 'कृपा कराई गुरुदेव'—ऐसा शब्द फरमाया है।

मेरे इस लेखन से साध्वीप्रमुखाश्रीजी का इच्छित काम पूरा हो गया है—ऐसा उनके संकेत से लग रहा है।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी : कृपा कराई।

मुनि दिनेश कुमार : गुरुदेव की मंगलकामना पूरी हो।

फिर प्रवास स्थल पर पधारने से पहले आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाश्रीजी के लिए नमस्कार महामंत्र, मंगलपाठ, विघ्नहरण, चइत्ता भार, संती कुंथु---आरोग्य बोहिलाभं तथा चन्देसु निम्मलयरा—इन मंत्रों को अपने श्रीमुख से फरमाया।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**